

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

### किताब पढने की दुआ

अज : शैभे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत, जानिये दा'वते इस्लामी, हजरत अल्लामा

मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अतार कादिरि र-अवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढने से पडले जैल में दी हुई दुआ पढ लीजिये  
اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा. दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَاَنْشُرْ  
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

तरजमा : ओ अल्लाह एज़्ज़ल्लु ज़ल्ल ! हम पर इल्मो हिकमत के दरवाजे भोल दे और हम पर  
अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ओ अ-अमत और बुज़ुर्गी वाले । (المستطرف ج ۱ ص ۴۰۱ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आभिर अेक अेक बार दुइद शरीफ़ पढ लीजिये.

तालिबे गमे मदीना

व अकीअ

व मजिदरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.



### बीमार आबिद

येह रिसाला (बीमार आबिद)

शैभे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत, जानिये दा'वते इस्लामी हजरत  
अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अतार कादिरि र-अवी ज़ियाह  
دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उर्दू ज़बान में तहरीर फ़रमाया है.

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को गुजराती रस्मुल  
पत में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-अतुल मदीना से शाअेअ करवाया है.  
इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाअें तो मजलिसे तराजिम को (अ जरीअअे  
मक्तूब, ई-मेईल या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाईये.

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-अतुल मदीना, सिलेकटेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,  
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## બીમાર આબિદ

શૈતાન લાખ સુસ્તી દિલાએ યેહ રિસાલા (48 સફહાત)  
મુકમ્મલ પઠ લીજિયે. إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى બીમારી બરદાશત કરને  
કા જઝબા દોબાલા હોગા.

### દુરુદ શરીફ કી ફઝીલત

સરકારે મદીના, રાહતે કલ્બો સીના, સાહિબે મુઅત્તર પસીના  
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કા ફરમાને બા કરીના હૈ : “એ લોગો ! બેશક બરોઝે  
કિયામત ઉસ કી દહ્શતોં ઔર હિસાબ કિતાબ સે જલ્દ નજાત પાને વાલા શખ્સ  
વોહ હોગા જિસ ને તુમ મેં સે મુઝ પર દુન્યા કે અન્દર બ કસરત દુરુદ શરીફ પઠે  
હોંગે.”

(الْفُرْدَوْسُ بِمَأْثُورِ الْخُطَابِ ج ٥ ص ٢٧٧ حديث ٨١٧٥)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

### બીમાર આબિદ

હઝરતે સચ્ચિદુના વહ્બ બિન મુનબ્બેહ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ સે મન્કૂલ  
હૈ : દો આબિદ યા'ની ઈબાદત ગુઝાર પચાસ સાલ તક અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ કી  
ઈબાદત કરતે રહે, પચાસવેં સાલ કે આબિર મેં ઉન મેં સે એક આબિદ  
સપ્ત બીમાર હો ગએ, વોહ બારગાહે રબ્બે બારી عَزَّوَجَلَّ મેં આહો ઝારી  
કરતે હુએ ઈસ તરહ મુલ્તજી હુએ (યા'ની ઈલ્તિજા કરને લગે) : “એ મેરે  
પાક પરવર દગાર عَزَّوَجَلَّ ! મેં ને ઈતને સાલ મુસલ્સલ તેરા હુકમ માના,  
તેરી ઈબાદત બજા લાયા ફિર ભી મુઝે બીમારી મેં મુબ્તલા કર દિયા  
ગયા, ઈસ મેં ક્યા હિકમત હૈ ? મેરે મૌલા عَزَّوَجَلَّ ! મેં તો આઝમાઈશ મેં

करमाने मुस्तफ़ी عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالصَّلَامُ : जिस ने मुज पर अक बार दुइटे पाक पढा अल्लाह उंस पर दस रहमतें भेजता है. (१)

डाल दिया गया हूँ.” अल्लाह ﷻ ने फिरिशतों को हुकूम फ़रमाया : “तुम से कडो, “तुम ने हमारी डी धमदाह व अहसान और अता कर्दा तौफ़ीक से हमारी धबाहत की सआहत पाई, बाकी रही बीमारी ! तो हम ने तुम को अबरार का रुत्बा देने के लिये बीमार किया है. तुम से पहले के लोग तो बीमारी व मुसीबतों के प्वाहिश मन्द हुवा करते थे और हम ने तुम्हें बिन मांगे अता फ़रमा दी.”

(عُيُونُ الْحَوَايَاتِ حِصَّة ٢ ص ٣١٢ بتصرف)

## बीमारी बहुत बडी ने'मत है

सदरुशशरीअह, अदरुतरिकह डजरते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ फ़रमाते हैं : बीमारी भी अक बहुत बडी ने'मत है, धस के मनाफ़ेअ बे शुमार हैं, अगर्ये आदमी को अ ज़ाहिर धस से तकलीफ़ पहोंयती है मगर डकीकतन राहत व आराम का अक बहुत बडा ज़प्पीरा हाथ आता है. येह ज़ाहिरि बीमारी जिस को आदमी बीमारी समजता है, डकीकत में ड़डानी बीमारियों का अक बडा ज़बर दस्त धलाज है. डकीकी बीमारी अमराजे ड़डानिया (म-सलन दुन्या की महब्बत, दौलत की हिस्र, बुप्पल, हिल की सप्ती वगैरा) हैं, के येह अलबत्ता बहुत फौफ़ की खीज है और धसी को म-रजे मोहलिक (या'नी डलाक करने वाली बीमारी) समजना ख़ाहिये.

(बडारे शरीअत, जि. 1, स. 799)

येह तेरा जिस्म ज़ो बीमार है तश्वीश न कर येह मरज तेरे गुनाहों को मिटा ज़ता है  
असल अरबाह कुन अमराज गुनाहों के हैं भाई क्यूँ धस को फ़रामोश किया ज़ता है

(वसाधले अफ़िश (मुरम्मम), स. 432)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

इरमाने मुस्तफ़ी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जो शप्स मुज़ पर दुर्रदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (طبرانی)

## बीमारी में मोमिन और मुनाफ़िक का फ़र्क

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने बीमारियों का ज़िक्र करते हुअे इरमाया : मोमिन जब बीमार हो फिर अच्छा हो जाअे, उस की बीमारी साबिका गुनाहों से कफ़़ारा हो जाती है और आयिन्दा के लिये नसीहत और मुनाफ़िक जब बीमार हुवा फिर अच्छा हुवा, उस की मिसाल ग़िंट की है, के मालिक ने उसे बांधा फिर षोल दिया तो न उसे येह मा'लूम, के क्यूं बांधा, न येह के क्यूं षोला!

(ابوداؤد ج 3 ص 260 حديث 3089 ملخصاً)

**उदीसे पाक की शर्ह :** मुफ़स्सिरे शहीर उकीमुल उम्मत उजरते मुफ़्ती अहमद यार पान عَيْنِهِ رَحْمَةُ الْكَرِيمِ اَلْحَنَّانِ इस उदीसे पाक के तह्त “मिरआत” जिल्द 2 सफ़हा 424 पर इरमाते हैं : क्यूंके मोमिन बीमारी में अपने गुनाहों से तौबा करता है, वोह समजता है के येह बीमारी मेरे किसी गुनाह की वजह से आई और शायद येह आबिरी बीमारी हो जिस के बा'द मौत ही आअे, इस लिये इसे शिफ़ा के साथ मग्दिरत ली नसीब होती है. (जब के) मुनाफ़िक गाफ़िल येही समजता है के हुलां वजह से मैं बीमार हुवा था (म-सलन हुलां यीज़ षा ली थी, मौसिम के तब्दीली के सबब बीमारी आई है, आज कल इस बीमारी की हुवा यली है वगैरा) और हुलां दवा से मुजे आराम मिला (वगैरा वगैरा) अस्बाब में औसा इंसा रहता है के मुसब्बिबुल अस्बाब (या'नी सबब पैदा करने वाले रब عَزَّوَجَلَّ) पर नजर ही नहीं जाती, न तौबा करता है न अपने गुनाहों में गौर.

(मिरआतुल मनाज्जिद)

मरज उसी ने दिया है दवा वोही देगा

करम से याडेगा जब ली शिफ़ा वोही देगा

سَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

करमाने मुस्तकी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझे पर दुर्रदे पाक न पढा तलकीक वोह बढ बप्त हो गया. (अबु)

## जम्मी होते ही हंस पडीं (हिकायत)

उजरते सय्यिदुना इत्त मौसिली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي की अहलियमे मोह-त-रमा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهَا अक मर्तबा जोर से गिरीं जिस से नापुन मुबारक टूट गया, लेकिन दर्द से “हाअे हू” करने के बजाअे हंसने लगीं !! किसी ने पूछा : क्या जम्म में दर्द नहीं हो रहा ? इरमाया : “सभ्र के बढले में हाथ आने वाले सवाब की ખुशी में मुजे योट की तकलीफ का ખयाल ही न आ सका.” (الْمَجَالِسَةُ لِلدِّيْنَورِي ج ۳ ص ۱۳۴)

अमीरुल मुअमिनीन उजरते मौलाअे काअेनात, अलिय्युल मुर्तजा शेरे ખुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم की अ-जमत और मा'रिफत का येह हक है के तुम अपनी तकलीफ की शिकायत न करो और न अपनी मुसीबत का तजकिरा करो.<sup>1</sup> (बिला उजरत बीमारी परेशानी का दूसरों पर एजहार बे सभ्री है अइसोस ! मा'मूली नजला और जुकाम या दर्द सर भी हो जाअे तो बा'ज लोग ख्वाह म ख्वाह हर अक को कहते फिरते हैं)

दूटे गो सर पे कोहे बला सभ्र कर, अै मुबद्लिग ! न तू उगमगा सभ्र कर

बब पे उई शिकायत न ला सभ्र कर, हां येही सुन्ते शाहे अबरार है

(वसाएले बख्शिश (मुरम्मम), स. 473)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## मुसीबत छुपाने की इमीलत

भीठे भीठे एस्लामी भाईयो ! बीमारी और परेशानी पर शिक्वा करने के बजाअे सभ्र की आदत बनानी याहिये के शिकायत करने से मुसीबत

مدینہ  
۱. منهاج القاصدين ومفيد الصادقين لابن الجوزي ص ۱۰۵۶

ફરમાને મુસ્તકા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुबह और दस मरतबा शाम दुइदें पाक पढा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (مُعْجَزَاتِهِ)

दूर नहीं छो जाती बल्के बे सध्री करने से सध्र का अज्ज जाओअ छो जाता है. बिवा ज़रत बीमारी व मुसीबत का ईजहार करना भी अच्छी बात नहीं. युनान्ये हज़रते सय्यिदुना ईब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फरमाते हैं के रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशाई फरमाया : “जिस के माल या ज्ञान में मुसीबत आई फिर उस ने उसे छुपाया और लोगों से उस की शिकायत न की तो अद्लाह عَزَّوَجَلَّ पर हक है के उस की मग्फ़िरत फरमा दे.” (مُعْجَمِ أَوْسَطِ ج ١ ص ٢١٤ حَدِيثِ ٧٣٧)

## दाढ में दर्द के सभभ में सो न सका ! (छिकायत)

हुज्जतुल ईस्लाम हज़रते सय्यिदुना ईमाम मुहम्मद गज़ाली नकल करते हैं : हज़रते सय्यिदुना अह्नफ़ बिन कैस रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फरमाते हैं : अेक बार मेरी दाढ में शदीद दर्द हुवा जिस के सभभ में सारी रात सो न सका. मैं ने दूसरे दिन अपने यथाज्ञान की भिदमत में शिकायत की, के “मैं दाढ के दर्द की वजह से सारी रात सो न सका.” ईस बात को मैं ने तीन बार दोहराया. ईस पर उन्हों ने फरमाया : तुम ने अेक ही रात में होने वाले अपने दर्द की ईतनी ज़ियादा शिकायत कर डाली ! डालां के मेरी आंभ को जाओअ हुअे तीस भरस छो चुके हैं, (अगर्ये देभने वालों को मा'लूम हो मगर अपनी ज़बान से) मैं ने कभी किसी से ईस की शिकायत नहीं की ! (أَحْيَاءُ الْعُلُومِ ج ٤ ص ١٦٤)

अद्लाहु रब्बुल ईज़्जत एَزَّوَجَلَّ की उन पर रडमत हो और उन के सढके डमारी बे डिसाभ मग्फ़िरत हो.

أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

## बीमार के लिये तोहफ़ा

सरवरे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फरमाने

इरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالهِ وَسَلَّمَ: जिस के पास मेरा ठिक हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की. (मैराज़क)

मुअज़्ज़म है : जब कोई बन्दा बीमार हो जाता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की तरफ़ दो किरिशते भेजता है के जा कर देखो मेरा बन्दा क्या कइता है. बीमार अगर अल्लाह तआला की उम्हो सना करता (म-सलन لِلَّهِ الْحَمْدُ कइता) है तो किरिशते अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में जा कर उस का कौल अर्ज करते हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भूष जानता है. एशदि एलाही होता है : “अगर मैं ने इस बन्दे को इस बीमारी में मौत दे दी तो इसे जन्नत में दाखिल करूंगा और अगर सिद्धत अता की तो इसे पइले से भी बेहतर गोशत और पून दूंगा और इस के गुनाह को मुआफ़ कर दूंगा.” (मौलामा मालक ज २ व ४२९ हदित १७९८)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“इल्ले रब” के पांय हुरइ की निरबत से बीमारी के

इमाधल पर 5 इरामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالِهِ وَسَلَّمَ

① बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे को बीमारी में मुज्तला इरमाता रहता है यहां तक के उस का हर गुनाह मिटा देता है. (अल्लुसुदरक ज १ व १६९ हदित १३२६)

② जब मोमिन बीमार होता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे गुनाहों से औसा पाक कर देता है जैसे लट्टी लोहे के जंग को साफ़ कर देती है.

(अल्लुसुदरक ज १ व १६६ हदित १३२६)

③ जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी मुसल्मान को जिस्मानी तकलीफ़ में मुज्तला करता है तो किरिशते से इरमाता है : “जो नेक अमल येह तन्दुरुस्ती की डालत में किया करता था इस के लिये वोही लिखो.” फिर अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे शिफ़ा अता इरमाता है तो उस के (गुनाह) धुल जाते हैं और वोह पाक हो जाता है और अगर उस की मौत आ जाये तो उस की मग्दिरत इरमा दी जाती है

करमाने मुस्तकी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुइद शरीक पड़ेगा मैं कियामत के दिन उस की शकाअत कइँगा. (कोरान)

और उस पर रहुम किया जाता है. (मुसुनो امام احمد بن حنبل ج ६ ص २९७ حديث १२०००)

﴿4﴾ मरीज के गुनाह इस तरह जडते हैं जैसे दरपत के पत्ते जडते हैं.

(الترغيب والترهيب ج ६ ص १६८ حديث ०१)

﴿5﴾ अद्लाह तआला इरमाता है : जब अपने बन्दे की आंभे ले लूं फिर वोह सभ्र करे, तो आंभों के बदले उसे जन्त दूंगा. (بخاری ج ६ ص १०३ حديث ०१)

### बिगैर बीमार हुओ वइत

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के जमाने में अेक शप्स का इन्तिकाल हुवा तो किसी ने कडा : “येह कितना फुश नसीब है के बीमार हुओ बिगैर ही इत छो गया.” तो रसूलुद्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : “तुम पर अइसोस है ! क्या तुम्हें नही मा'लूम, के अगर अद्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे किसी बीमारी में मुतला इरमाता तो उस के गुनाह मिटा देता.”

(موطأ امام مالك ج २ ص ६३० حديث १८०१)

### अेक रात के बुभार का सवाब

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! बुभार में जिस्मानी तकलीफ जइर है मगर उअरवी इअदे बे शुमार हैं, लिहाजा घबरा कर शिक्वा व शिकायत करने के बजाअे सभ्र कर के अज्ज कमाना याहिये. उअरते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है : जो अेक रात बुभार में मुतला हो और उस पर सभ्र करे और अद्लाह عَزَّوَجَلَّ से राजी रहे तो अपने गुनाहों से अैसे निकल जाअे जैसे उस दिन था जब उस की मां ने उसे जना था.

(شعَبُ الْإِيمَان ج ७ ص १६७ حديث १८६८)

### बुभार महशर की आग से बयाओगा

हुजूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अेक मरीज की



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : મુઝ પર દુરુદે પાક કી કસરત કરો બેશક યેહ તુમ્હારે લિયે તહારત હૈ.  
(ابن ماجه)

ઈયાદત ફરમાઈ તો ફરમાયા : તુઝે બિશારત હો, કે અલ્લાહ તઆલા ફરમાતા હૈ : બુખાર મેરી આગ હૈ ઈસ લિયે મૈં ઈસે અપને મોમિન બન્દે પર દુન્યા મેં મુસલ્લત કરતા હૂં તાકે કિયામત કે દિન ઈસ કી આગ કા હિસ્સા (યા'ની બદલા) હો જાએ. (૩૬૪૦ હદિથ ૧૦૦૬૮ માજે)

## બુખાર કો બુરા ન કહો

સરકારે મદીના, કરારે કલ્બો સીના صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ હઝરતે સચ્ચિ-દતુના ઉમ્મે સાઈબ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا કે પાસ તશરીફ લે ગએ. ફરમાયા : તુમ્હેં ક્યા હો ગયા હૈ જો કાંપ રહી હો ? અર્ઝ કી : “બુખાર આ ગયા હૈ, અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ ઈસ મેં બ-ર-કત ન કરે.” ઈસ પર આપ صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને ઈર્શાદ ફરમાયા : “બુખાર કો બુરા ન કહો, કે યેહ તો આદમી કી ખતાઓ કો ઈસ તરહ દૂર કરતા હૈ જૈસે ભટ્ટી લોહે કે મૈલ કો.” (૨૦૧૦ હદિથ ૧૩૧૨ મુસ્લમ)

મુફ્સિરે શહીર હકીમુલ ઉમ્મત હઝરતે મુફ્તી અહમદ યાર ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْكَرَّامَاتِ ઈસ હદીસે પાક કે તહ્ત ફરમાતે હૈં : બીમારિયાં એક યા દો ઉઝ્વ કો હોતી હૈં મગર બુખાર સર સે પાઉં તક હર રગ મેં અસર કરતા હૈ, લિહાજા યેહ સારે જિસ્મ કી ખતાઓં ઓર ગુનાહોં કો મુઆફ કરાએગા. (મિરઆતુલ મનાજીહ, જિ. 2, સ. 413)

યેહ તેરા જિસ્મ જો બીમાર હૈ તશ્વીશ ન કર

યેહ મરઝ તેરે ગુનાહોં કો મિટા જાતા હૈ

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

## સરકાર કો દો મર્દોં કે બરાબર બુખાર આતા થા

હઝરતે સચ્ચિદુના અબ્દુલ્લાહ ઈબને મસ્ઉદ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ફરમાતે હૈં કે મૈં બારગાહે રિસાલત મેં હાઝિર હુવા ઓર જબ મૈં ને

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : توم جذاً لمى لى موزا पर दुदुद पढे के तुम्हारा दुदुद मोज तक पढीयता है. (طرائق)

આપ ﷺ को छुवा तो अर्ज की : या रसूलव्वाह  
 ﷺ ! आप को तो बहुत तेज बुभार है ! फरमाया :  
 हां ! मुजे तुम्हारे दो मर्दों के बराबर बुभार होता है. मैं ने अर्ज की : क्या  
 येह इस लिये के आप ﷺ के लिये दुगना सवाब होता  
 है ? ईशाद फरमाया : हां ! (مسلم ص ۱۳۹۰ حدیث ۲۰۷۱)

### हम ने कभी किसी का बुरा नहीं याहा !

भीठे भीठे ईस्लामी ભાઈયો ! બા'ઝ લોગ બીમારિયોં ઔર  
 પરેશાનિયોં પર બે સબ્રી કા મુઝા-હરા કરતે હુએ યેહ કહતે સુનાઈ દેતે  
 હેં કે હમ ને તો કભી કિસી કા બુરા નહીં યાહા, કિસી કા કુછ નહીં  
 બિગાડા ફિર ભી ન જાને હમ પર યેહ પરેશાનિયાં ક્યૂં ! ઐસોં કે લિયે  
 બયાન કદા હદીસે પાક મેં કાફી વ વાફી દર્સ મૌજૂદ હૈ, યકીનન હમારે  
 મા'સૂમ આકા ﷺ ને કભી ભી કિસી કા કુછ નહીં  
 બિગાડા થા, ફિર ભી આપ ﷺ को दीगर मर्दों के  
 मुकाबले में दुगना बुभार आता था तो मा'लूम हुवा के “दूसरों का कुछ  
 बिगाडना” ही बीमारियों और मुसीबतों का बाईस नहीं होता, नीज  
 बीमारियां और परेशानियां मुसल्मान को सवाब का ખઝાના દિલાતીં,  
 ગુનાહોં કો મુઆફ કરવાતીં ઔર સબ્ર કરને વાલે મુસલ્માન કો જન્નત  
 કા હકદાર બનાતી હેં.

### મરીઝ ઔર કલિમએ કુફ

બા'ઝ અવકાત નાદાન લોગ બીમારી ઔર મુસીબત સે તંગ આ  
 કર અલ્લાહ તઆલા પર એ'તિરાઝ કરતે હુએ કુફિયાત બક દેતે હેં,  
 યકીનન ઈસ તરહ ઉન કી બીમારી યા મુસીબત દૂર તો હોતી નહીં ઉલ્ટા

करमाने मुस्तकी صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर दस भरतबा दुरुदे पाक पढा अल्लाह उरस पर सो रलभते नाजिल करमाता है. (जब्रान)

उन की अपनी आभिरत दाव पर लग जाती है. मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ किताब, “कुङ्किया कलिमात के बारे में सुवाल जवाब” सङ्ख्या 179 पर है : अगर कीसी ने बीमारी, बे रोजगारी, गुरबत या किसी मुसीबत की वजह से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर अतिराज करते हुअे कहा : “अै मेरे रब ! तू मुज पर क्यूं गुल्म करता है ? हावां के मैं ने तो कोई गुनाह किया ही नहीं.” तो वोह काङ्कुर है.

जहां पर शिकवअे रन्जे अलम लाया नहीं करते  
नबी के नाम लेवा गम से धबराया नहीं करते  
صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

### सवाब के शौक में मांग कर बुभार लिया (हिकायत)

सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का सवाब कमाने का जजबा सद करोड भरलबा ! के सवाब कमाने के शौक में दुआ मांग कर बुभार हासिल कर लिया ! युनान्चे हजरते सय्यिदुना अबू सईद जुदरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है के अेक मुसल्मान ने अर्क की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! हम जिन बीमारियों में मुप्तला होते हैं हमारे लिये उन में क्या है ? ईशाद इरमाया : (येह बीमारियां गुनाहों के) कङ्कुरे हैं. हजरते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्क की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! अगर्ये बीमारी कम ही हो ? इरमाया : “अगर्ये कांटा चुभे या कोई और तकलीफ पड़ोये.” तो हजरते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने लिये येह दुआ की (या अल्लाह) : “भरते दम तक बुभार मुज से जुदा न हो और येह बुभार मुजे हज, उम्रह, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद और इर्क नमाज बा जमाअत अदा करने से न रोके.” इर उन



इरमाने मुस्तफ़ी عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالسَّلَامُ : उस शप्स की नाक भाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिंक हो और वोह मुज पर दुवुदे पाक न पड़े. (6)

म-दनी काङ्किलों में हुसूले दीन की गरज से सङ्कर करने वाले आशिकाने रसूल भी शामिल हैं यूँके येह सभ राहे भुदा में डोते हैं लिहाजा एन में से भी किसी को सर का दई हुवा तो إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ उस के पिछले गुनाह (सगीरा) मुआफ़ कर दिये जाअेंगे.

### सर दई के शुकाने में 400 रकअत नङ्कल (हिकायत)

म-ङ्कल है के डउरते सय्यिदुना इत्ह मौसिली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي को दई सर हुवा तो भुश हो कर एशाद इरमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुजे वोह मरज एनायत इरमाया जो अम्बियाअे किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को दरपेश होता था लिहाजा अब एस का शुकाना येह है के मैं 400 रकअत नङ्कल पढूं. (152 रकमत बरी हिकायत, स. 171)

### बुभार और दई सर, मुभारक अमराज हैं

दा'वते इस्लामी के एशाअती एदारे मक-त-भतुल मदीना की मत्भूआ 561 सङ्कलत पर मुशतमिल किताब, "मङ्कूआते आ'ला डउरत" सङ्कल 118 पर है : (आ'ला डउरत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाते हैं :) दई सर और बुभार वोह मुभारक अमराज हैं जो अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को डोते थे, अक वलियुल्लाह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के दई सर हुवा, आप ने एस शुक्रिये में तमाम रात नवाङ्किल में गुजार दी, के रब्बुल एज्जत तभा-र-क व तआला ने मुजे वोह मरज दिया जो अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को डोता था. अल्लाहु अकबर ! यहां (अवाम की) येह डालत, के अगर बराअे नाम दई मा'लूम हुवा तो येह भयाल डोता है के जल्ल नमाज पढ लें. इर इरमाया : हर अक मरज या तकलीफ़ जिस्म के जिस मौजेअ (या'नी जगह) पर डोती है वोह जियादा कङ्कारा उसी मौकअ (या'नी मकाम)

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جِسْمِ نِے مُؤَلَّہ پَر رُوئے جُو مُؤَا ءو سُو بَار دُرُءَہ پَاک پءَا ءس کَ ءو سُو سَال کَ گُو نَا ء مُؤَا کَ ءُو گَے . (کَرَامَات)

કા હૈ કે જિસ કા તઅલ્લુક ખાસ ઈસ સે હૈ લેકિન બુખાર વોહ મરઝ હૈ કે તમામ જિસ્મ મેં સરાયત કર જાતા હૈ જિસ સે બિ ઈઝનિહી તઆલા (યા'ની અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ કે હુકમ સે) (બુખાર) તમામ રગ રગ કે ગુનાહ નિકાલ લેતા હૈ. (મલ્કૂઝતે આ'લા હઝરત, સ. 118)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَيِّبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

### જન્નતી ખાતૂન (હિકાયત)

હઝરતે સચ્ચિદુના અતા બિન અબૂ રબાહ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ફરમાતે હૈં કે હઝરતે સચ્ચિદુના ઈબને અબ્બાસ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ને મુઝ સે ફરમાયા : કયા મૈં તુમ્હેં એક જન્નતી ઔરત ન દિખાઊં ? મૈં ને અઝ્ કી : ઝરૂર દિખાઈયે. ફરમાયા : યેહ હબશી ઔરત, ઈસ ને નબિય્યે કરીમ, રઊકુરુદીમ عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالتَّسْلِيمِ કી ખિદમતે બા બ-ર-કત મેં હાઝિર હો કર અઝ્ કી : يَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! મુઝે મિર્ગા<sup>1</sup> કા મરઝ હૈ જિસ કી વજહ સે મૈં ગિર જાતી હૂં ઔર મેરા પર્દા ખુલ જાતા હૈ લિહાઝા અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ સે મેરે લિયે દુઆ કીજિયે. ફરમાયા : “અગર તુમ ચાહો તો સબ્ર કરો ઔર તુમ્હારે લિયે જન્નત હૈ ઔર અગર ચાહો તો મૈં અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ સે દુઆ કરું, કે વોહ તુમ્હેં આફિયત ઈનાયત ફરમા દે.” અઝ્ કી : મૈં સબ્ર કરુંગી. ફિર અઝ્ કી : (જબ મિર્ગા કા દૌરા પડતા હૈ) મેરા પર્દા ખુલ જાતા હૈ, અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ સે દુઆ કીજિયે કે મેરા પર્દા ન ખુલા કરે. ફિર આપ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને ઈસ કે લિયે દુઆ ફરમાઈ.

(بخاری ج ٤ ص ٦٠٢ حدیث ٥٦٠٢)

1 : એક બીમારી જિસ સે આ'ઝા મેં ઝટકે લગતે હૈં.

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुज पर दुइद शरीक़ पढो अल्लाह عَلَّوْم पर रउमत भेजेगा. (अनसरी)

## दवा भी सुन्नत है और दुआ भी

मुफ़्फ़िसरे शहीर उकीमुल उम्मत उजरते मुफ़्फ़ती अहमद यार भान عَلَّوْمُ الْحَنَّانِ عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْكَرِيمِ मिरआत जिल्द 2 सफ़्हा 427 पर इरमाते हैं : उस मुबारक औरत का नाम सुअैरा या सुकैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا है बीबी अदीजा (لمعات ومرقات) की कंधी योटी की भिदमत अन्जाम देती थीं رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا (मिर्गी में गिर जाती हूँ और मेरा पदार्थ फुल जाता है) के ज़िम्न में मुफ़्फ़ती साहिब इरमाते हैं : या'नी गिर कर मुझे तन बदन का डोश नहीं रहता, दुपट्टा वगैरा उतर जाता है, भौंफ़ करती हूँ के कभी बेडोशी में सित्र न फुल जाये. आगे यल कर सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तरफ़ से उस सहाबिया को “शिफ़ा या सफ़्र” का इप्तियार देने के तअल्लुक से मुफ़्फ़ती साहिब इरमाते हैं : इस में इशा-रतन मा'लूम हुवा के कभी बीमारी की दवा और मसाइब में दुआ न करना सवाब और सफ़्र में शामिल है इस का नाम फुदकुशी नहीं, फुसूसन जब पता लग जाये के येह मुसीबत रब की तरफ़ से इम्तिहान है इसी लिये (उजरते सय्यिदुना) इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने नमइद की आग में जाते वक्त और उजरते (सय्यिदुना इमाम) हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने मैदाने करबला में दइय्या (या'नी आजमाइश दूर होने) की दुआ न की, वरना आम डालात में दवा भी सुन्नत है और दुआ भी. (मिरआतुल मनाज्जिद)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

## मिर्गी का इहानी घलाफ़

सू-रतुशशम्स को पढ कर मिर्गी वाले के कान में झूंक मारना बहुत मुफ़्फ़िद है. (जन्ती जेवर, स.602)

﴿۱﴾ **इरमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज़ पर कसरत से दुर्रदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज़ पर दुर्रदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मज़िहरत है. (अ. १५)

## नस यढ जाने की इज़ीलत

उम्मुल मुअमिनीन उज़रते सय्यि-दतुना आ'शशा सिदीका **﴿۱﴾** इरमाती हैं के मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर **﴿۱﴾** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को इरमाते सुना : जब मोमिन की नस यढ जाती है तो **﴿۱﴾** अद्लाह उंस का ओक गुनाह मिटा देता है, उंस के लिये ओक नेकी लिखता है और उंस का ओक द-रज़ा बुलन्द इरमाता है. (२६१० हदीथ ६४ व २८ ज २) (مُعْجَم أَوْسَط ج २ ص ६४)

## पेट की बीमारी में मरने की इज़ीलत

सरकारे आली वकार, मदीने के ताजदार **﴿۱﴾** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने राहत निशान है : **﴿۱﴾** يَا'नी जिसे उंस के पेट (की बीमारी) ने मारा उंसे अज़ाबे क़ब्र न ढोगा.

(त्रुमिदी ज २ व २३६ हदीथ १०१६)

मुइस्सिरे शहीर उकीमुल उम्मत उज़रते मुइती अहमद यार **﴿۱﴾** जान **﴿۱﴾** عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا की शर्ह में इरमाते हैं : या'नी पेट की बीमारी से मरने वाला अज़ाबे क़ब्र से मडकूज़ है क्यूंके उंसे दुन्या में उंस मरज की वजह से बहुत तकलीफ़ पड़ोय युकी, येह तकलीफ़े क़ब्र का दइ'थ्या (या'नी दूर करने वाली) बन गइ. (मिरआत, जि. 2, स. 425)

**“या हुसैन” के छ हुइइ की निरुबत से 6 तरह की बीमारियों में मरने वाले शहीदों की निशान देही जा'अ अमराअ में मरने वाला शहीद है**

﴿1﴾ **“पेट की बीमारी में मरने वाला.”** (उंस के हाशिये में सदरुशरीअह **﴿۱﴾** رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाते हैं : उंस से मुराद इस्तिस्का (या'नी औसी बीमारी जिस में पेट बढ जाता है और प्यास बहुत लगती है) या **“दस्त (MOTION) आना”**



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : જો મુઝ પર એક દુરુદ શરીફ પઢતા હે અલ્લાહ ઘરૂજલ (સે કે લિયે એક કીરાત અજા લિખતા હે ઓર કીરાત ઉદુદ પહાડ જિતના હે. (મહારજ)

દોનો કૌલ હૈં ઓર યેહ લફઝ દોનો કો શામિલ હો સકતા હૈ લિહાઝા (સે કે ફઝલ સે ઉમ્મીદ હૈ કે દોનો કો શહાદત કા અજા મિલે) ﴿2﴾ જાતુલ જમ્બ (યા'ની પહલૂ યા પસ્લી કે દર્દ) મેં મરને વાલા ﴿3﴾ સિલ (કે ઈસ મેં ફેફડોં મેં ઝખ્મ હો જાતે ઓર મુંહ સે ખૂન આને લગતા હૈ ઈસ) મેં મરને વાલા ﴿4﴾ બુખાર મેં મરને વાલા ﴿5﴾ મિર્ગી મેં મરને વાલા ﴿6﴾ જો મરઝ મેં

لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ 40 બાર કહે ઓર ઉસી મરઝ મેં મર જાએ (વોહ શહીદ હૈ) ઓર અચ્છા હો ગયા તો ઉસ કી મર્ગિરત હો જાએગી. (તફસીલ કે લિયે દેખિયે : બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 857 તા 863 મક-ત-બતુલ મદીના)

### મરીઝ કી ઇયાદત કા સવાબ

હઝરતે સય્યિદુના અબૂ બક સિદીક رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ સે રિવાયત હૈ કે હુઝૂરે પાક, સાહિબે લૌલાક, સય્યાહે અફલાક صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને ઇશાદ ફરમાયા : મૂસા (عَلَيْهِ السَّلَام) ને અલ્લાહ ઘરૂજલ સે અર્ઝ કી : મરીઝ કી ઇયાદત કરને વાલે કો ક્યા અજા મિલેગા ? તો અલ્લાહ ઘરૂજલ ને ઇશાદ ફરમાયા : “ઉસ કે લિયે દો ફિરિશ્તે મુકરરર ક્રિયે જાએંગે જો કબ્ર મેં હર રોઝ ઉસ કી ઇયાદત કરેંગે હતા કે ક્રિયામત આ જાએ.” (૧૦૩૧ હદિથ ૧૧૩ સ ૩ ص ۳) (أَلْفُ رَدُّوسَ بِمَأْثُورِ الْخُطَابِ ج ۳ ص ۱۹۳ ح ۱۰۳۱)

### બીમાર કો દુઆ કે લિયે કહો

રસૂલે અકરમ, નૂરે મુજસસમ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કા ફરમાને અ-ઝમત નિશાન હૈ : જબ તુમ કિસી બીમાર કે પાસ જાઓ તો ઉસે અપને લિયે દુઆ કે લિયે કહો, કે ઉસ કી દુઆ ફિરિશ્તોં કી દુઆ કી તરહ હૈ.

(ابن ماجه ۲ ص ۱۹۱ ح ۱۴۴۱)

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज पर दुइदु पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिफ़ार करते रहेंगे. (ग्रान)

## धयादत करते वक्त की अेक सुन्नत

हुजूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अेक आ'राबी की धयादत को तशरीफ़ ले गअे और आदते करीमा येह थी के जब किसी मरीज की धयादत को तशरीफ़ ले जाते तो येह फरमाते :

- لَا بَأْسَ طَهُورًا شَاءَ اللهُ - (या'नी : कोई हरज की बात नहीं अद्लाह तआला

ने याहा तो येह मरज (गुनाहों से) पाक करने वाला है.) उस आ'राबी से ली

येही फरमाया : لَا بَأْسَ طَهُورًا شَاءَ اللهُ - (بخاری ج ۲ ص ۵۰۰ حدیث ۳۶۱۶)

## धयादत में सात बार पढने की दुआ

उजरते सय्यिदुना धुने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है के नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फरमाया :

जिस ने किसी अैसे मरीज की धयादत की जिस की मौत का वक्त करीब न आया

हो और सात मर्तबा येह अद्लाज कहे तो अद्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे उस मरज से

शिक्षा अता फरमाअेगा : يَا نَبِيَّ اللهِ الْعَظِيمِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ أَنْ يَشْفِيكَ :

में अ-जमत वाले, अर्शे अजीम के मालिक अद्लाह عَزَّوَجَلَّ से तेरे लिये शिक्षा का

सुवाल करता हूं.

(ابوداؤد ج ۳ ص ۲۰۱ حدیث ۳۱۰۶)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

“यल मदीना” के सात हुइइ की निरभत से

धयादत के 7 म-दनी फूल

✽ मरीज की धयादत करना सुन्नत है ✽ अगर मा'लूम है के

धयादत को जाअेगा तो उस बीमार पर गिरां (या'नी ना गवार) गुजरेगा

अैसी हालत में धयादत न करे ✽ धयादत को जाअे और मरज की सप्ती

देषे तो मरीज के सामने येह ज़ाहिर न करे के तुम्हारी हालत खराब है

﴿مُتَّعْتُمْ بِأَمْوَالِكُمْ لِمَن نَّارْتَدُّ بِهَا﴾ : جس نے تم کو اس کے لئے ایک بار دہریہ پاک پٹا اٹھا لیا ہے اور تم اسے  
 24 مرتبہ لے جاتا ہے۔ (س)

और न सर छिलाये जिस से डालत का पुराब होना समजा जाता है  
 ✽ उस के सामने ऐसी बातें करनी या छिअें जो उस के दिल को भली  
 मा'लूम हों ✽ उस की मिजाज पुर्सी करे ✽ उस के सर पर हाथ न रभे  
 मगर जब के वोड खुद इस की प्वाछिश करे ✽ फ़ासिक की ध्यादत भी  
 जाधज है क्यूंके ध्यादत हुकूके धस्लाम से है और फ़ासिक भी मुस्लिम है.

(बहारे शरीअत, जि.3, डिस्सा : 16, स. 505 मुलम्भसन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## बीमारी और मूट

भीठे भीठे धस्लामी भाधयो ! सध करोड अइसोस ! अडा नाजुक  
 दौर है, “जूट” भोलने जैसे डराम और जडन्नम में ले जाने वाले काम  
 से अयने का जेडून बहुत कम रह गया है, न भौंके खुदा है न शर्म  
 मुस्तफ़ा, न अजाबे कब्र का धउका है न दोजभ का पटका ! डर तरइ  
 गोया ! जूट ! जूट ! और अस जूट का राज है ! यकीन मानिये ! बीमार  
 हो या तीमार दार, मरीज हो या मिजाज पुर्सी करने वाला रिशतेदार,  
 दोस्त दार या मडल्ले दार जिसे देभो ! बे धउक जूट भोलता दिभाध दे  
 रडा है. यूंके येड रिसाला बीमारी के मु-तअल्लिक है लिहाजा उम्मत की  
 भैर प्वाही के लिये “बीमारी” के यन्द जुदा जुदा उन्वानात के तइत  
 भोले जाने वाले जूट की कुछ मिसालें पेश की जाती हैं :

### मा'मूली बीमारी को सप्त बीमारी

#### कहने के मु-तअल्लिक मूट की 6 मिसालें

जिस डिस्म के मुभा-लगे का आदतन रवाज है लोग उसे  
 मुभा-लगे ही पर मइमूल (या'नी गुमान) करते हैं इस के डकीकी मा'ना

करमाने मुस्तफ़ی صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم : जो शप्स मुज पर दुवदे पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (جران)

मुराद नहीं लेते वोह जूट में दाबिल नहीं, म-सलन येह कहा के तुम्हारे पास हज़ार मर्तबा आया या हज़ार मर्तबा मैं ने तुम से येह कहा. यहां हज़ार का अदद मुराद नहीं बल्के कई मर्तबा आना और कहना मुराद है, येह लफ़्ज़ जैसे मौकअ पर नहीं बोला जायेगा के अेक ही मर्तबा आया हो या अेक ही मर्तबा कहा हो और अगर अेक मर्तबा आया और येह कह दिया के हज़ार मर्तबा आया तो जूटा है. (رَدُّ الْمَحْتَارِ ١٤ ص ٧٠٠)

﴿1﴾ भा'ज अवकात बीमारी का तजक़िरा करने में अेसा मुबा-लगा किया जाता है के उई व रवाज में लोग उस हद की बीमारी को बयान करने के लिये मुबा-लगे के अैसे अल्फ़ाज ईस्ति'माल नहीं करते, म-सलन : किसी को मा'भूली सी बीमारी हो उस के बारे में कहना : "उस की तबीअत बहुत सप्त नासाज है" येह जूट है ﴿2﴾ ईजतिमाअ वगैरा में हकीकत में तो किसी और वजह से शिकत न की और ईत्तिफ़ाक से कोई मा'भूली सी बीमारी भी थी मगर गैर हाज़िरी का सबब बीमारी न होने के बा वुजूह कहना : "मैं सप्त बीमार था इस लिये न आ सका." इस ज़ुम्ले में गुनाह तरे दो जूट हैं ! (الف) मा'भूली सी बीमारी को "सप्त बीमारी" कहा (ب) बीमारी को गैर हाज़िरी का सबब करार दिया हावां के सबब कुछ और था ﴿3﴾ इसी तरह मा'भूली बुभार हो और कहना : "मुझे ईतना तेज बुभार था के सारी रात सो नहीं सका" ﴿4﴾ काम के लिये बोलें तो मा'भूली थकावट होने के बा वुजूह जान छुडाने के लिये कहना : "मैं बहुत थका हुआ हूं किसी और से काम का कह दें" हां सिई ईतना कहा : "थका हुआ हूं" तो जूट नहीं. या ﴿5﴾ मा'भूली सा दई हो तब भी बोलना : मेरी टांगों में शहीद दई है

﴿۶﴾ **इरमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइडे पाक न पढा तहकीक वोह भद भप्त हो गया. (उरु)

﴿6﴾ यूँही कोर्ट क्यहरी में पेशी वगैरा से बयाने के लिये मा'मूली बीमारी को बडा बना कर पेश करना म-सलन कहना : एन के दिल की शिरयान (VEIN) बन्द है, दिल का दौरा पड सकता है वगैरा.

### दुजों के बा वुजूद नेकियों भरे जवाबात की मिसालें

मिजाज पुर्सी करने में अक्सर रस्मी सुवालात की तकरार होती है म-सलन : क्या डाल है ? भैरियत है ? आइय्यत है ? कैसे हैं आप ? सिद्धत कैसी है ? और सुनाओ तबीअत अच्छी है ? ठीकठाक हैं ना ? कोई परेशानी तो नहीं ? वगैरा वगैरा. तजरिबा येही है के उमूमन साईल (या'नी पूछने वाला) सिर्फ़ बोलने की खातिर बोल रहा होता है, उकीकत में मुजातब (या'नी जिस की मिजाज पुर्सी कर रहा है उस) की तबीअत से उसे कोई दिल यस्पी नहीं होती. अब अगर मस्गिल या'नी जिस से सुवाल किया गया वोह शप्स बीमार, टेन्शन का शिकार, कर्जदार और मुश्किलात से दो बार हो और अपने अमराज और दुजों की झईल भोल दे और परेशानियों की झैहरिस बयान करना शुइअ कर दे तो जुद साईल या'नी मिजाज पुर्सी करने वाला इम्तिहान में पड जाअे ! लिहाजा जिस से तबीअत पूछी गई वोह याडे तो ब निय्यते शुके ईलाही मुप्तलिफ़ ने'मतों म-सलन : इमान की दौलत मिलने, दामने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हाथ में होने का तसप्पुर बांध कर इस तरह के जवाबात दे कर सवाब कमा सकता है : ﴿1﴾ الْحَمْدُ لِلَّهِ ﴿2﴾ الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ ﴿3﴾ मालिक का बहुत करम है ﴿4﴾ अद्लाह तआला की रहमत है वगैरा. इसी तरह अद्लाह तआला की अता कर्दा दीगर ने'मतों के मुकाबले में अपनी

करमाने मुस्तफ़ा : صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : जिस ने मुज पर अेक बार दुरदे पाक पढा अल्लाह عزوجل उस पर दस रडमते बेजता है. (مسلم)

तक्लीफ़ों को कमतर तसप्पुर करते हुअे भी शुके ँलाही की नियत से या रडमते ँलाही की उम्मीद पर बयान कर्दा यार जवाबात में से कोर्ष सा जवाब दे सकता है. याद रहे ! अगर बीमारी पर तवज्जोह है लेकिन ँस के बा वुजूद बिगैर शर-ँरुप्सत के اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ, मालिक का करम है या ँसी तरह का कोर्ष जुम्ला कडना जिस से बीमार डोने के बा वुजूद ँसी मरज के मु-तअद्लिक सिद्दहत बेडतर बताना मकसूद डो जिस के बारे में पूछा जा रहा है तो येह गुनाह त्भरा जूट है.

### मिठाज पुर्सी के जवाब में जूट जोलने की 9 मिसालें

जब किसी से पूछा जाता है : आप की तबीअत कैसी है ? तो तबीअत नासाज डोने के बा वुजूद बसा अवकात ँस तरह के जवाबात मिलते हैं : ﴿1﴾ ठीक हूँ ﴿2﴾ बहुत ठीक हूँ ﴿3﴾ बिडकुल ठीक हूँ ﴿4﴾ तबीअत इर्स्ट क्लास है ﴿5﴾ अेवन तबीअत है ﴿6﴾ किसी डिस्म की तक्लीफ़ नहीं है ﴿7﴾ मजे में हूँ ﴿8﴾ जर्रा बराबर भी कोर्ष मस्अला नहीं है ﴿9﴾ अेक दम इ्रिट हूँ.

मरीज की तरफ़ से दिये जाने वाले मजकूरा 9 जवाबात गुनाह त्भरे जूट हैं. अलबत्ता मरीज की जवाब देने में कोर्ष सडीह तावील (या'नी बयाव की सख्खी दलील) या दुरुस्त नियत डो तो गुनाह से बयत मुम्किन है मगर उमूमन बिगैर किसी नियत के ही मजकूरा और ँस से मिलते जुलते जूटे जवाबात दे दिये जाते हैं. अगर बीमारी जेडून में न डो, जैसे आरिजी या'नी वक्ती तौर पर डो जाने वाले आराम पर बसा अवकात ँन्सान अपनी बीमारी त्भूल जाता है, तो अैसी डालत में "ठीक हूँ" वगैरा कड दिया तो गुनाह नहीं नीज मा'भूली मरज में

करमाने मुस्तक। عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोड जन्त का रास्ता भूल गया. (جران)

बीमारी को ना काबिले जिक समजते हुअे या अक्सर मरज ठीक हो जाने और मा'भूली सा रह जाने की सूरत में भी “ठीक हूँ” कहने में हरज नहीं अलबत्ता जैसे मौकअ पर बिल्कुल ठीक हूँ, इस्ट क्लास तबीअत है, अवन हूँ, जरा बराबर भी कोई मस्अला नहीं है और इसी मा'ना के दीगर अल्फाज कहना गुनाह बरा जूट शुमार होंगे.

### कहने की अेक नियत

किसी ने तबीअत पूछी और मरीज के मुंह से बिगैर किसी नियत के बे इप्तिहार निकला : “الْحَمْدُ لِلَّهِ” तो इस में हरज नहीं. या बीमारी की तरफ तवज्जोह होने के आ वुजूह “ठीक हूँ” के मा'ना में नहीं बल्के हर हाल में शुके इलाही बजा लाने की नियत से कहा : “الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ” (या'नी हर हाल में अल्वाह का शुक्र है) तो इस सूरत में भी जूट नहीं.

### मरीज को तसल्ली देने के लिये

### बोले जाने वाले जूट की 13 मिसालें

(जो बात सय का उलट है वोड जूट है)

जैल में जो जुम्ले दिये जा रहे हैं येड जूट भी हो सकते हैं और नहीं भी, यूंडी इन के बोलने में रुप्सत की सूरत भी हो सकती है और नहीं भी, लिहाजा अगर कोई दूसरा शप्स येड जुम्ले बोले तो हम उस के बारे में गुनाहगार होने की बद्द गुमानी न करें अलबत्ता अपनी उद्द तक इस तरह के जुम्ले बोलते वक्त बात की सद्दाकत और अपनी नियत का ખयाल रખें. समजाने के लिये अेक मिसाल अर्ज है के जैसे अेक आदमी ने हमारे सामने मुरग्गन (या'नी तेल घी वाला) पाना

करमाने मुस्तफ़ی علیہ السلام : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइदे पाक न पढा तलकीक वोड भद भप्त हो गया. (उरुः)

जाया और किसी दूसरे शप्स से कडा के मैं परहेज कर रहा हूं तो ज़रूरी नहीं येड कडना जूट हो क्यूंके हो सकता है के डॉक्टर ने महीने में अेक मर्तबा ँस तरड जाने की ँजाजत दी हो या येड जुम्वा कडते वक्त काँल की (या'नी कडने वाले की) तवज्जोड अपने जाने की तरफ़ न रडी हो. ँसी तरड अकिय्या जुम्बों में भी अहुत से अेडतिमालात व कियासात हो सकते हैं.

﴿1﴾ आप तो ﷻ अहुत सअ्र (या हिम्मत) वाले हैं ﴿2﴾ आप ने तो अडे अडे दुअ उठाअे हैं मगर कभी “उफ़” तक नहीं किया ﴿3﴾ आप ने तो अमेशा सअ्र डी किया है ﴿4﴾ वाड ! अई वाड ! आप के येडरे पर तो “पानी” आ गया है ﴿5﴾ ﷻ अब तो आप अिल्कुल डीक हो युके हैं ! ﴿6﴾ आप तो बीमार लग डी नहीं रहे ! ﴿7﴾ आप की बीमारी अाग गई है ! ﴿8﴾ नहीं ! नहीं ! आप को तो कुँअ भी नहीं हुवा है ﴿9﴾ मुबारक हो ! आप की सारी रिपोर्टें क्लीयर आई हैं ﴿10﴾ तशवीश नाक मरज पर मुत्तलअ होने के आ वुजूड कडना : “अबराने की कोई आत नहीं, डॉक्टर तो अ्वाड म अ्वाड डी डरा देते हैं” ﴿11﴾ कुलां को भी येड मरज हुवा था दो दिन में डीक हो गया था तुम भी जल्डी डीक हो जाओगे (जिस मरीज का अवाला दे रहे होते हैं उस का अकीकत की दुन्या में कोई वुजूड नहीं होता) ﴿12﴾ अुअार में तपते मरीज की नअ्ज पर अथ रअ कर जान अूज कर कडना : “नहीं आई ! नहीं ! तुअें कोई अुअार वुअार नहीं है” ﴿13﴾ दिल की ताँड न होने के आ वुजूड मअ्ज तसल्वी देने के लिये सप्त बीमार से कडना : “आई ! तुम तो छोटी सी बीमारी में दिल अार अैठे !”



करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुबह और दस मरतबा शाम दुरुदे पाक पढा उसे क्रियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (मुत्तावा)

## मरीज के जूट बोलने की 13 मिसालें

(जो बात सच का उलट है वोह जूट है)

- «1» केन्सर वगैरा के अन्देशे के मौकअ पर कहना : “मुझे अपनी बीमारी की कोई परवा नहीं, बस छोटे छोटे बख्यों की झिंक है” «2» मेरे पास बिल्कुल गुन्जाईश नहीं, मैंँ ईलाज का ખर्य भरदाश्त कर ही नहीं सकता (हालां के अख्शी ખासी रकम जम्अ कर के रખी होती है) «3» गुन्जाईश होने के आ वुजूद लोगों की हमददियां लेने के लिये कहना : मेरे पास खाने को पैसे नहीं हैंँ ईलाज के लिये कहां से लाऊँ ! «4» मैंँ कुल परहेजी कर रहा हूँ (हालां के कहीं दा’वत हो तो “जनाब” सब से पहले ज़ा पड़ोयते हैंँ) «5» डॉक्टर साहिब ! बिल्कुल टार्थम टू टार्थम दवा पी रहा हूँ (हालां के ખूब नागे कर रहे होते हैंँ) «6» शूगर के मरीज का कहना : मैंँ मिठाई तो यખता तक नहीं (जब के बेयारे मिठाई खाने से बाज़ नहीं रह पा रहे होते) «7» किसी लारी लरकम शप्स को वज़ून कम करने का हमददना मशवरा मिलने पर जवाब : मैंँ खाने पीने में क़ाई अेहतियात कर रहा हूँ (हालां के कढाई गोश्त हो या फ़ाय गोश्त, शरबत हो या ठन्डी बोतल, कोरमा हो या बिरयानी, कबाब हो या समोसा जो ली ईन के सामने आता है बय कर नहीं जाता !) «8» मरज की तरफ़ तवज्जोह होने के आ वुजूद कहना : लला यंग्गा हूँ «9» मैंँ बीमार थोड़ी हूँ «10» गिले शिक्वे का अम्भार लगाने के आ’द कहना : “मैंँ ने सफ़्र का दामन हाथ से नहीं छोडा” (येह गुनाह लरा जूट उसी सूरत होग़ा जब के बोलते वक्त सफ़्र की ता’रीफ़ की तरफ़ तवज्जोह हो) «11» तकलीफ़ की शिदत के आ वुजूद कहना : “नहीं ! नहीं ! मुझे कोई तकलीफ़ नहीं हो रही !” «12» मुझे बीमारी का गम नहीं अपने

करमाने मुस्तकी عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ठिक हुआ और उस ने मुझ पर दुःख शरीक न पड़ा  
(उस ने जका की. (عبدالرزاق))

वक्त के आगेअ होने का अफ़सोस छो रखा है ﴿13﴾ पैराती शिक्षापाने में मुफ़्त एलाज करवाने के आ वुजूद कलना : “एलाज के सारे अमराजत में ने खुद बरदाश्त किये हैं किसी ने जूटे मुंह भी तआवुन की पेशकश नहीं की.”

## बीमारियों के 78 इहानी एलाज

(अयान कर्दा तिब्बी और देसी एलाज अपने तबीअ के मशवरे से कीजिये)

### बुभार के चार इहानी एलाज

﴿1﴾ बुभार वाला अ कसरत بِسْمِ اللَّهِ الْكَبِيرِ पढता रहे.

﴿2﴾ गरमी का बुभार छो तो يَا حَىُّ يَا قَيُّوْمُ 47 बार लिख (या लिखवा) कर प्लास्टिक कोटिंग कर के यमडे या रेगजीन या कपडे में सी कर गले में डाल दीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى बुभार जाता रहेगा.

﴿3﴾ يَا غَفُورُ कागज पर तीन बार लिख (या लिखवा) कर प्लास्टिक कोटिंग कर के यमडे या रेगजीन या कपडे में सी कर गले में डाल या आजू पर बांध दीजिये, إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى हर किस्म के बुभार से नजात मिलेगी.

﴿4﴾ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ 30 बार कागज पर लिख कर पानी की बोतल में डाल कर मरीज को दिन में तीन बार थोडा थोडा पानी पिलाईये إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى बुभार उतर जायेगा, जरूरतन मजीद पानी शामिल करते रहिये. (मुदते एलाज : ता हुसूले शिक्षा)

﴿5﴾ जैसे बुभार का इहानी एलाज जो एवाओं से न जाता हो अमल के दौरान मरीज सूती (या'नी COTTON के) कपडे पहने रहे (केटी या दूसरे मसूई धागे के अने हुअे कपडे न हों) अअ कोई दुस्त कुरआन पढने वाला आ वुजू हर बार بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ के साथ अ आवाजे

करमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : जो मुज़ पर रोज़े जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढेगा मैं डियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूँगा. (क़ुरआन)

बुलन्द 21 बार सू-रतुल क़द्र ईस तरह पढे, के मरीज़ सुने, मरीज़ पर दम भी करे और पानी की बोतल पर भी दम करे. मरीज़ वक्तन इ वक्तन उस में से पानी पीता रहे. येह अमल तीन दिन तक मुसव्सल कीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** बुज़ार यला ज़ाओगा.

### ﴿6﴾ नींद न आने के दो इहानी घलाज़

जिस को दई वगैरा के सबब नींद न आती हो तो उस के पास **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** कसरत से पढने से उस को **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** नींद आ ज़ाओगी नीज़ अह्लाहु रब्बुल ईज़ज़त **عَزَّوَجَلَّ** की रहमत से मरीज़ जल्द सिद्धत याब भी हो ज़ाओगा. (मरीज़ को पढने की आवाज़ न ज़ाओ ईस की खेदतियात कीजिये)

﴿7﴾ अगर नींद न आती हो तो **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 11 बार पढ कर अपने ठीपर दम कर दीजिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** नींद आ ज़ाओगी.

### जारवरों के काटने और उन से हिफ़ाज़त के 3 इहानी घलाज़

﴿8﴾ जहां ज़हरीले जानवर ने काटा हो उस के गिर्द उंगली घुमाता हुवा अक सांस में सात बार **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** पढ कर दम करे **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** ज़हूर का असर जाईल (या'नी अत्म) हो ज़ाओगा.

﴿9﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 11 बार लिख (या लिखवा) कर विलादत के बा'द झौरन नहला कर बख्ये को पलना देने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** मूज़ी जानवरों और पेयिश के मरज़ से हिफ़ाज़त होगी.

﴿10﴾ अगर रास्ते में कुत्ता भोंकने और हम्ला करने लगे तो **يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ** 3 बार पढ लीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** कुत्ता युपयाप वापस यला ज़ाओगा.

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : صَلَى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : મુઝ પર દુરુદે પાક કી કસરત કરો બેશક યેહ તુમહારે લિયે તહારત હૈ. (અબુલૈલી)

## જિન્નાત કે અ-સરાત કે 3 રૂહાની ઇલાજ

﴿11﴾ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ 21 બાર જો રાત સોતે વક્ત પઢ લે, ઉસ રાત વોહ હર કિસ્મ કે ના-ગહાની (યા'ની અયાનક હોને વાલે) હાદિસાત, શરીર ઈન્સાન વ જિન્નાત કે હમ્લોં ઓર અયાનક મોત્ત સે મહફૂઝ રહે. اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ

﴿12﴾ يَا اللّٰهُ يَا حَىُّ يَا قَیُّوْمُ કા આસેબ ઝદા બ કસરત વિદે કરતા રહે, આસેબ જાતા રહેગા. اِنْ شَاءَ اللّٰهُ تَعَالَى

﴿13﴾ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ 41 બાર લિખ (યા લિખવા) કર પ્લાસ્ટિક કોટિંગ કર કે ચમડે યા રેગ્ઝીન યા કપડે મેં સી કર બાઝૂ મેં બાંધ લે યા ગલે મેં પહન લે, اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ અ-સરાત દૂર હોગે.

## ﴿14﴾ સોતે મેં કોઈ ચીઝ તંગ કરતી હો યા.....

નીંદ ન આતી હો, ડરાવને ખ્વાબ આતે હોં, નીંદ મેં જિસ્મ પર વઝન પડતા હો યા એસા મહસૂસ હોતા હો જૈસે કોઈ દબોચ રહા હૈ નીઝ જિન્ન, જાદૂ વગૈરા બલા વ આફત સે હિફાઝત કે લિયે સોતે વક્ત ઉમ્ર ભર રોઝાના બિલા નાગા યેહ અમલ કીજિયે : દોનોં હાથોં કી હથેલિયાં ફૈલા કર તીનોં ફુલ શરીફ (યા'ની સૂ-રતુલ ઈખ્લાસ, સૂ-રતુલ ફલક ઓર સૂ-રતુન્નાસ) એક એક બાર પઢ કર ઉન પર દમ કર કે સર, યેહરે, સીને ઓર આગે પીછે જહાં તક હાથ પહોંચે સારે બદન પર ફેરિયે. ફિર દોબારા, સેહબારા (યા'ની તીસરી બાર) ઈસી તરહ કીજિયે. اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ ઈસ કા ફાએદા ખુદ હી દેખ લેંગે.

## જાદૂ કે 2 રૂહાની ઇલાજ

﴿15﴾ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ 101 બાર પઢ કર સેહર ઝદા (યા'ની જિસ પર જાદૂ

﴿ 37 ﴾ इरमाने मुस्तफ़ा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْوَسْمُ : تُمُّمُ جَلْدًا بَلِي لَوْ مُؤْجَلٌ عَلَى دُرْدُودٍ مَدَوِّعَةٍ كَيْ تُمُّمُكَارًا دُرْدُودٍ مُؤْجَلٌ تَكُّمُ مَدَوِّعَتَا هِيَ. (طُرُقًا)

किया गया हो (उस) पर दम कर दिया जाये या येही लिख कर धो कर पिला दिया जाये तो **﴿ 37 ﴾** **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** से छर (या'नी ज़दू) का असर खत्म हो जायेगा.

﴿16﴾ मरीज के सर से ले कर पाउं के अंगूठे तक आस्मानी रंग के ग्यारह सूती धागे नाप लीजिये, उन ग्यारह धागों को दूो मर्तबा तह कर लीजिये, अब धागे के सिरे पर एक ढीली गिरह लगाईये फिर एक बार सू-रतुल इलक पढ कर उस गिरह में इंक मारिये और झौरन कस दीजिये, इसी तरीके पर ग्यारह गिरहें लगाने के बाद धागे को दहक्ते कोमेलों में डाल दीजिये. (गेस के यूल्हे पर तवा वगैरा रख कर उस पर भी जला सकते हैं) अगर ज़दू हुवा तो बढबू आयेगी, जब तक बढबू आती रहे रोजाना एक बार येह अमल करते रहिये, **﴿ 37 ﴾** **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** ज़दू का असर खत्म हो जायेगा.

### इलिज व लक्वा के 2 इहानी इलाज

﴿17﴾ **﴿ 17 ﴾** **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** 11 बार नई रिकाबी पर लिख कर पीने से लक्वे से नजात मिलेगी.

﴿18﴾ **﴿ 18 ﴾** **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** 100 बार सोते वक्त पढने से शयातीन की शरारत नीज इलिज और लक्वे की आफत से डिफ़ाजत होगी.

**लक्वे का देसी इलाज** : मज्जे रीठा इस्बे ज़रूरत (देसी दवा की दुकान से) ले कर कूट लीजिये, अब खालिस शहूद डाल कर यने के बराबर गोदियां बना लीजिये, एक एक गोली सुबह व शाम नीम गर्म दूध पत्ती<sup>1</sup> याय के साथ इस्ति'माल कीजिये. यन्द दिन या यन्द इहते या यन्द माह के इस्ति'माल से **﴿ 37 ﴾** **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** शिफ़ा नसीब हो जायेगी.

<sup>1</sup> : दूध पत्ती का मा'ना : ऐसी याय बनाना जिस में पानी का इस्ति'माल न हुवा हो.

करमाने मुस्तक़। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस भरतबा दुरदे पाक पढा अल्लाह عز وجل उस पर सो रडमते नाजिल करमाता है. (भरान)

### हेपाटाइटिस का इहानी घलाज

﴿19﴾ हर बार بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ के साथ सूरअे कुरैश 21 बार (अव्वल आभिर 11 बार दुरद शरीफ़) पढ (या पढवा) कर आबे जमजम शरीफ़ या उस पानी में जिस के अन्दर आबे जमजम शरीफ़ के यन्द कतरे शामिल हों दम कीजिये और रोजाना सुबह, दो पहर और शाम पी लीजिये. **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** 40 रोज़ के अन्दर अन्दर शिफ़ायाब हो जाअेंगे. (सिर्फ़ अेक बार दम किया हुवा पानी काफ़ी है इस्बे ज़रत मज़ीद पानी मिला लीजिये)

### यरकान (JAUNDICE) के 4 इहानी घलाज

﴿20﴾ छोटे बच्चे को यरकान (पीलिया, JAUNDICE) हो गया हो तो हर बार بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ के साथ सू-रतुल फ़ातिहा 21 बार पढ कर पियाज पर दम कर के उस के गले में पढना दीजिये. **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** शिफ़ा हासिल होगी.

﴿21﴾ सू-रतुल बय्यिनह लिख कर ता'वीज बना कर गले में पढना दीजिये **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ الْعَزِیْزُ** यरकान जाता रहेगा.

﴿22﴾ **سَبِّحْ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ** ① (28:1, العشر: 1) 101 बार पढ कर पानी पर दम कर के पिलाना यरकान के लिये **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** निहायत मुफ़ीद रहेगा.

﴿23﴾ **يٰٰحَسِبُّ** 300 बार पढ कर पानी पर दम कर के छक्कीस (21) दिन तक पिलाने से **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** यरकान से शिफ़ा हासिल होगी.

### दांतों के दर्द के 2 इहानी घलाज

﴿24﴾ सूरअे यासीन की येह आयत : **اِنَّ سَلٰمًا قَوْلًا مِّنْ رَّبِّ رَحِیْمٍ** ⑤

करमाने मुस्तफ़ा عليه و آله و سلم : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरुद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगों में से क्यूस तरीन शप्स है. (ज़िबे सिया)

बार पढ कर अपनी उंगली पर दम कर के दांतों पर मलिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** दई जाता रहेगा.

﴿25﴾ **يَا أَلَلَّهُ** 7 बार कागज़ पर लिख (या लिखवा) कर ता'वीज़ की तरफ लपेट कर (बेहतर येह है के प्लास्टिक कोटिंग कर के) दाढ के नीचे दबाने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** दाढ का दई दूर हो जाओगा.

**दांत के दई का देसी नुस्खा :** मसूढ़ों में दई या सूजन हो, पीप आता हो तो तकरीबन 5 ग्राम इट्करी को अेक गिलास पानी में गर्म कर लीजिये और जब इट्करी पिघल कर पानी में घुल जाये तो उस को दांतों और मसूढ़ों पर मल लीजिये मसूढ़ों में दई या सूजन हो या पीप आती हो, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** फ़ायेदा हो जाओगा.

### ﴿26﴾ दांत के दई का एकसीर अमल

अगर दांत में सप्त दई हो तो बा वुजू सूरअे कुरैश 21 बार पढ कर नमक पर दम कीजिये और वोह नमक दई वाले दांत पर मलिये और दांतों के दरमियान रफिये दिन में दो तीन बार येह अमल करने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** फ़ायेदा हो जाओगा.

### ﴿27﴾ पित्ते और मसाने की पथरी का इहानी इलाज

**يَا أَلَلَّهُ** 46 बार सादा कागज़ पर लिख कर पानी में धो कर पीने से पित्ते और मसाने की पथरी **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** रेजा रेजा हो कर निकल जाओगी. (मुदते इलाज : ता हुसूले शिफ़ा)

### कय्ये पपीते के ठरीअे गुर्दे और पित्ते की पथरी का इलाज

कय्ये पपीते पर सईद या काला नमक लगा लीजिये और थोड़ी सी पिसी लुई काली मिर्य छिउक लीजिये और दिन में तीन मर्तबा

करमाने मुस्तक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरदे पाक न पड़े. (८५)

(तकरीबन दस दस ग्राम) भूष अस्थी तरल यभा कर पाईये, यभाना दुशवार हो तो पीस कर भी ईस्ति'माल कर सकते हैं. **إِنْ شَاءَ اللهُ** गुर्दे (और पित्ते) की पथरी निकल जायेगी. जियादा मिकदार में न पाईये क्यूंके येह सकील (या'नी वजनी) होने के सबब देर से हज़्म होता है (अगर्ये दूसरी चीजों को जल्द हज़्म करने में मदद देता है).

### गुर्दे और पेशाब की बीमारियों के 3 इहानी धलाव

﴿28﴾ **وَقِيلَ يَا رُضُّ اِبْلَعِي مَاءَكَ وَيَسْمَاءُ اَقْلَعِي وَغَيْضُ الْبَاءِ وَقِضَى**

﴿(१२५, १२६, १२७)﴾ थोडा थोडा पेशाब बार बार आता हो तो ईस के लिये ईन आयाते मुभा-रका को लिख (या लिखवा) कर बाजू में बांध या गले में पहन लिया जाये तो **إِنْ شَاءَ اللهُ** शिफा हासिल होगी.

﴿29﴾ अेक बार दुरद शरीफ़ पढ कर हर बार **بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** के साथ सूरअे अलम नशरह 7 बार फिर आबिर में अेक बार दुरद शरीफ़ पढ कर दम कर दीजिये, **إِنْ شَاءَ اللهُ** गुर्दे का दर्द भत्म हो जायेगा.

﴿30﴾ गुर्दों की बीमारी के सबब पेशाब थोडा थोडा आता हो या पेशाब में जलन और खुत्मन होती हो और कोई दवा कारगर न होती हो तो बारिश के पानी पर आ वुजू हर बार **بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** के साथ सूरअे अलम नशरह ग्यारह बार पढ कर दम कर दीजिये और दिन में बार बार (सुब्ह नाश्ते से कब्ल, जोहर के वक्त, अस्र के बाद और सोते वक्त) तीन तीन घूंट वोह पानी पियें. हर बार पीने से पहले सात बार दुरदे ईब्राहीम पढ लीजिये. **إِنْ شَاءَ اللهُ** गुर्दे की बीमारी और पेशाब की जलन वगैरा दूर हो जायेगी.



करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (क़ुरआन)

## गुर्दे की बीमारियों के लिये तिब्बी नुस्खा

रोजाना सुबह नहार मुंछ तीन ग्राम मीठा सोडा पानी से 'इस्ति'माल कीजिये (तबीब की 'इज्जत से), प्यास हो या न हो ज़ियादा से ज़ियादा पानी 'इस्ति'माल कीजिये. ग्यारह दिन में **إِنْ شَاءَ اللهُ** आराम आ जायेगा. अगर मरज़ पुराना है तो 41 दिन तक येह 'इलाज कीजिये.

## पेशाब में मून आने का इहानी इलाज

﴿31﴾ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَاءُ الْحُسْنٰی ۝ یَسْبِغُ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۝ وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۳۱﴾ (الحشر: ۲۴)

कल्मी मसाने या गुर्दे में पथरी के सबब या गर्म तासीर वाली चीजों के कस्स्ते 'इस्ति'माल से पेशाब में मून आने लगता है. नीज़ लाल भिर्य का ज़ियादा 'इस्ति'माल पेशाब में जलन पैदा करता है. मरीज़ को याहिये के गर्म तासीर वाली चीजों और लाल भिर्यों से परहेज़ करे. हर दो घन्टे बा'द अक्वल आभिर तीन तीन बार दुरुद शरीफ़ के साथ़ ठीपर दी हु'ई आयते मुबा-रका तीन बार पढ कर पानी पर दम कर के पी लीजिये. (मुद्दते 'इलाज : ता हुसूले शिफ़ा)

## नाफ़ का इहानी इलाज

﴿32﴾ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝ سَلَّمَ ۝ قَوْلًا مِّن رَّبِّ رَحِیْمٍ ﴿۳۲﴾ (یس: ०८)

कागज़ पर बा वुजू लिख (या लिखवा) कर प्लास्टिक कोटिंग कर के कपडे वगैरा में सी कर नाफ़ पर 'इस तरह बांधिये के नाफ़ के नीचे न जाये. **إِنْ شَاءَ اللهُ** शिफ़ा हासिल होगी.

## अहतिलाम के दो इहानी इलाज

﴿33﴾ सूरअे नूह सोते वक्त अेक बार पढ कर अपने ठीपर दम कीजिये. **إِنْ شَاءَ اللهُ** अहतिलाम नही होगा.

﴿34﴾ کرمانے مستحقاً: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاللَّهُ وَسَلَّمَ: मुज पर दुइद शरीफ़ पढो अल्लाह उजल तुम पर रहमत भेजेगा. (अबु सरी)

﴿34﴾ सोते वक्त हिल की जगह शहाहत की उंगली से “या उमर” लिखने की आदत बनाईये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** शैतान के दप्ल से मड़कूळ रहते हुअे अेहतिलाम से बयेंगे.

### आंभों के अमराळ के 3 इहानी धलाज

﴿35﴾ **يَا شَكُورُ** अगर आंभों में रोशनी कम हो गई हो तो 41 बार पढ कर पानी पर दम कर के आंभों पर येह पानी मलिये. (मुदते इलाज : ता हुसूले शिफ़ा)

﴿36﴾ नजर कमजोर हो जाअे या खली जाअे तो “**يَا رَحْمَنُ يَا رَحِيمُ يَا اللَّهُ يَا سَلَامُ**” 41 बार (अवल आभिर अेक बार दुइद शरीफ़) पढ कर दोनों हाथों में पानी ले कर दम करे और मुंह पर डाले और आंभों पर मले **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** फ़ाअेदा होगे. (मुदते इलाज : मुसव्सल 7 दिन) म-दनी इूल : मुंह पर डालते वक्त कोई पाक कपडा वगैरा बिछा लीजिये ताके दम किये हुअे पानी की बे अ-दबी न हो.

﴿37﴾ **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** हर नमाळ के आ'द तीन बार पढ कर उंगली पर दम कर के अपनी आंभों पर लगाईये. येह अमल उम्र भर जारी रखिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** बीनाई की कमजोरी दूर होगी नीळ सईद और काले मोतिये से भी डिफ़ाजत होगी.

### कान के दर्द का इहानी धलाज

﴿38﴾ **يَا سَمِيعُ** 21 बार (अवल आभिर तीन मर्तबा दुइद शरीफ़) पढ कर मरीळ के दोनों कानों में इंक मार दीजिये. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** कान के दर्द से छुटकारा मिलेगा. (मुदते इलाज : ता हुसूले शिफ़ा)

करमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم: मुज़ पर कसरत से दुरुद पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज़ पर दुरुद पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मक्किरत है. (भा.स.भ.)

## नज़ला मुकाम का इहानी धलाज

﴿39﴾ हर बार بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ के साथ सू-रतुल इतिहा तीन बार (अव्वल आभिर तीन मर्तबा दुरुद शरीफ़) पढ कर तीन रोज तक रोजाना मरीज़ पर दम कीजिये. إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ नज़ला मुकाम से नज़ात हासिल होगी.

## ﴿40﴾ दिल की घडकन बढ जाने का इहानी धलाज

101 سَلَّمَ قَوْلًا مِنْ رَبِّ رَحِيمٍ ﴿٥٨﴾ सू-रअे यासीन की येह आयत : 58 बार, अव्वल आभिर तीन तीन बार दुरुद शरीफ़ पढ (या पढवा) कर किसी जाने या पीने की थीज़ पर दम कर के जा या पी लीजिये, शिफ़ा मिलेगी. (मुदते धलाज : ता हुसूले शिफ़ा)

## ﴿41﴾ दिल के सूराभ का इहानी धलाज

75 لَآ إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ बार पढ कर दिल में सूराभ वाले बख्ये नीज़ घबराहट, दिल और सीने के तमाम मरीज़ों के सीने पर दम करना बि इज़लिही तआला मुफ़ीद है.

## न-ज़रे बढ के 3 इहानी धलाज

﴿42﴾ 60 لَآ إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ बार पढ कर दम कीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ न-ज़रे बढ का असर ज़ता रहेगा.

﴿43﴾ हर थीज़ जाने पीने से कबल بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ पढ लेने का आदी إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ न-ज़रे बढ से मलफूज़ रहेगा.

## नज़र और दई का इहानी धलाज

﴿44﴾ 786 يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ बार कागज़ पर लिख (या लिखवा) कर

करमाने मुस्तक। عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद पाक न पढा तलकीक वोड बढ भप्त हो गया. (अबु)।

ता'वीज की तरह लपेट कर प्लास्टिक कोटिंग कर के रेग्जीन या कपडे वगैरा में सी कर बाजू में बांध या गले में पहन लीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** न-जरे बढ का असर भत्म हो जायेगा. जिस के हाथ पाँव में दई हो उस के लिये भी येह ता'वीज **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** मुझीद है.

**नजर और हर किसम के शर से बख्यों की हीफात के लिये**

﴿45﴾ बा वुजू हर बार **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** के साथ तीन तीन बार सू-रतुल इतिहा, सू-रतुल इल्हास, सू-रतुल इलक और सू-रतुनास (अव्वल आभिर तीन बार दुरुद शरीफ) पढ कर बख्यों पर दम कीजिये. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** बख्ये नजर लगने वगैरा से मडकूज रहेंगे. (येह अमल रोजाना सुब्ह व शाम या'नी दिन में दो बार करना है)

### मिर्गी के 3 इहानी धलाज

﴿46﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 66 बार रोजाना पढ कर मिर्गी के मरीज पर दम कीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** इअेदा होगा. धलावा अर्जी बुभार, नजला, जुकाम, पांसी हर किसम के दई और आंभों की बीमारियों के लिये भी येह इहानी धलाज मुझीद है. (मुदते धलाज : ता हुसूले शिफा)

﴿47﴾ **يَا اللَّهُ يَا رَحْمَنُ** 40 बार अेक सांस में पढ कर जिसे मिर्गी का दौरा पडा हो उस के कान में दम कीजिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** झौरन डोश में आ जायेगा.

﴿48﴾ **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** के साथ सू-रतुशम्स पढ कर मिर्गी वाले के कान में झूंक मारना बहुत मुझीद है.

### सर के बाल ढडने का इहानी धलाज

﴿49﴾ बा वुजू हर बार **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** के साथ सू-रतुल्लैल 41 बार पढ कर सरसों या नारियल के तेल की बोतल पर दम कर लीजिये,

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुँज पर दस भरतबा सुब्द और दस भरतबा शाम दुइरे पाक पढा (उसे क्रियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (मुँज उरुव)

रोजाना सोते वक्त सर पर ँस तेल की मालिश कीजिये. कुछ दिन मालिश करने से ۞ شَاءَ اللهُ ۞ सर के बाल जडना बन्द हो जायेंगे. दाढी के बाल जडते हों तो उस के लिये भी येह अमल मुफ़ीद है. (जरतन उसी बोतल में दूसरा तेल शामिल कर लीजिये)

### गन्ज दूर करने का अमल

जैतून के तेल में शहद एक यम्मय और पिसी हुई दारचीनी आधा यम्मय मिला कर गन्ज पर लगाईये. कुछ अर्सा मुसदसल ँस्ति'माल करने से ۞ شَاءَ اللهُ ۞ नअे बाल निकलना शुइअ हो जायेंगे.

### सूजन का इहानी छलाज

﴿50﴾ अगर बदन पर कहीं वरम या'नी सूजन हो गई हो तो ۞ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ ۞ 67 बार लिख (या लिखवा) कर अपने पास रखिये या ता'वीज बना कर पहन लीजिये ۞ شَاءَ اللهُ ۞ वरम दूर हो जायेगा.

### मूठी अमराज से हिफ़ाजत का इहानी नुस्खा

﴿51﴾ ۞ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ ۞ 76 बार कागज वगैरा पर लिख (या लिखवा) कर आबे जमजम शरीफ़ से धो कर पीने वाला ۞ شَاءَ اللهُ ۞ मूठी अमराज से महकूज रहेगा.

### कमर के दर्द का इहानी छलाज

﴿52﴾ इज की सुन्नतों और इर्ज के दरमियान हर बार ۞ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۞ के साथ 41 बार सू-रतुल फ़ातिहा पढिये (मुदत : ता हुसूले शिफ़ा) एक साखिब का कलना है : “ ۞ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۞ में ने येह इहानी छलाज किया तो मेरी कमर का दर्द यला गया.”

करमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : जिस के पास मेरा जिक हुआ और उस ने मुज पर दुरुद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (عبارات)

## आधे और पूरे सर के दई के 5 इहानी धलाज

﴿53﴾ **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** ७ पढ कर सर पर दम कीजिये

दई जाता रहेगा येही कागज पर लिख कर ता'वीज बना कर सर में बांध लेने से भी **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** ७ फ़ाअेदा हो जाअेगा.

﴿54﴾ **يَا سَلَامُ** 11 बार पढ कर दम कीजिये, 3 या 7 या 11 बार ईसी

तरह पढ कर दम कीजिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** 11 बार की ता'दाद पूरी होने से कबल ही आधे सर का दई काफ़ूर (या'नी दूर) हो जाअेगा, येह अमल पूरे सर के दई के लिये भी **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** ७ मुफ़ीद है.

﴿55﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 65 बार आ'द नमाजे अस्सर पढ कर सर पर दम करने

से आधे और पूरे सर का दई अल्लाह पाक के करम से भत्म हो जाअेगा.

﴿56﴾ ज़बान पर अेक चुटकी नमक रभ कर 12 मिनट के आ'द अेक

गिलास पानी पी लीजिये सर में कैसा ही दई हो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** ७ फ़ाअेदा हो जाअेगा. (छाई बलड प्रेशर के मरीज येह धलाज न करें, के उन के लिये नमक का ईस्ति'माल नुकसान देह होता है)

﴿57﴾ **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** ७ **بِسْمِ اللَّهِ رَبِّ الْأَرْضِ وَالسَّمَاءِ**

**بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي بِيَدِهِ شَفَاءُ** ७ **بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ**

मरीज के सर पर हाथ रभ

कर तीन बार या सात बार येह दुआ पढ कर सर पर दम कीजिये.

**إِنْ شَاءَ اللَّهُ** ७ शिफ़ा हासिल होगी.

करमाने मुस्तफ़ा على الله تعالى عليه و آله وسلم : श्री मुज पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढेगा मैं क्रियामत के दिन उस की शक्राअत करूँगा. (क्रआमाल)

**दर्रें सर, यक्कर आने और दिमागी कमजोरी का इहानी घलाज**

﴿58﴾ **أَسْكُنْ سَكَنَتَكَ بِالَّذِي لَهُ مَا فِي اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ**

जिस के सर में दर्र हो या यक्कर आते हों उस के सर पर दर्र की जगह हाथ रख कर येह कलिमात सात बार पढ कर सर पर झूंक मार दीजिये. ईस्लामी बहन जुद अपने सर के दर्र की जगह पकड़ ले और उस का महरम या शोहर पढ कर उस के सर पर झूंक मार दे, मरीज से पूछ लीजिये, अगर अभी दर्र बाकी हो तो दोबारा येही अमल कीजिये, यन्द मर्तबा करने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** सर का दर्र खत्म हो जायेगा और दिमागी कमजोरी दूर होगी मगर दिमागी कमजोरी के लिये येह जरूरी है के येह अमल रोजाना किसी ओक ही वक्त में (म-सलन रोजाना दिन के 12 बजे) सात दिन तक मुसल्लस किया जाये.

### दीनी इम्तिहान में काम्याबी के लिये

﴿59﴾ दीनी मद्रसे का तालिबे इल्म, इम्तिहान में काम्याबी के लिये पांथों नमाजों के बाद बा वुजू हर बार **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** के साथ सू-रतुल इफ्वास 16 मर्तबा पढे और फिर अल्लाह तआला से इम्तिहान में काम्याबी की दुआ मांगे, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** उसे काम्याबी हासिल होगी. येह अमल अपने वतन में या बैरने मुल्क जाईज मुला-जमत के हुसूल की खातिर इन्टरव्यू में काम्याबी के लिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** कारआमद है.

**आइतों, बीमारियों, बे रोजगारियों के दो इहानी घलाज**

﴿60﴾ **يَا سَلَامُ** : उठते बैठते, चलते, फिरते, बा वुजू पढते रहिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى**

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاللَّهُ وَسَلَّمَ: મુઝ પર દુરૂદે પાક કી કસરત કરો બેશક યેહ તુમહારે લિયે તહારત હૈ. (શી-૧)

અમરાઝ વ આફાત સે નજાત મિલેગી ઓર રોઝી મેં બ-ર-કત હોગી.

﴿61﴾ દાઈમી મરીઝ હર વક્ત **يَا مُعِيْدُ** પઢતા રહે, અલ્લાહુ રબ્બુલ ઈઝ્ઝત સિહ્હત ઈનાયત ફરમાએગા.

### ખાવન્દ કો નેક નમાઝી બનાને કે લિયે

﴿62﴾ ખાવન્દ બુરી આદત કા શિકાર હો ઓર ઘર મેં હર વક્ત ઝગડા રહતા હો તો બીવી હર બાર **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** કે સાથ ગ્યારહ મર્તબા સૂ-રતુલ ફાતિહા પઢ કર પાની પર દમ કરે ફિર અપને ખાવન્દ કો પિલાએ, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** શોહર નેકી કે રાસ્તે પર ગામઝન હો જાએગા. (શોહર બલ્કે કિસી કો ભી ઈસ અમલ કા પતા ન ચલે વરના ગલત ફહમી કે સબબ પરેશાની હો સક્તી હૈ) જબ જબ મૌકઅ મિલે યેહ અમલ કર લિયા જાએ, દમ કિયા હુવા પાની ફૂલર મેં મૌજૂદ પાની મેં ભી ડાલા જા સક્તા હૈ, બેશક ખાવન્દ કે ઈલાવા ઓર અફરાદે ખાના ભી ઉસ મેં સે પિયેં, ઝરૂરતન દૂસરા પાની ફૂલર મેં ડાલતે રહેં.

### કેન્સર કે 4 રૂહાની ઇલાજ

﴿63﴾ અવ્વલ આબિર ગ્યારહ બાર દુરૂદે ઈબ્રાહીમ ઓર દરમિયાન મેં “સૂરએ મરયમ” પઢ કર પાની પર દમ કીજિયે, ઝરૂરતન દૂસરા પાની મિલાતે રહિયે, મરીઝ વોહી પાની સારા દિન પિયે, યેહ અમલ ચાલીસ દિન તક બિલા નાગા કરતે રહિયે, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** શિક્કા હાસિલ હોગી. (દૂસરા ભી પઢ કર દમ કર કે મરીઝ કો પિલા સક્તા હૈ)

﴿64﴾ યેહ આયતે કરીમા : (۱۶: ۱۷۹) **أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ** ﴿۱۶﴾

2022 બાર (અવ્વલ આબિર 11 બાર દુરૂદ શરીફ) પઢ કર કેન્સર કે



करमाने मुस्तफ़ा : حلى الله تعالى عليه و آله وسلم : तुम जहां भी हो मुज पर दुरद पढो के तुम्हारा दुरद मुज तक पहुँचता है. (طبرانی)

मरीज पर दम कीजिये पानी और दवा पर दम कर के भी पिलाईये,

إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى बहुत फ़ाअेदा होगा. (मुदत : ता हुसूले शिफ़ा)

﴿65﴾ सात दिन तक रोजाना आ वुजू **يَارْقِيْبُ** 100 बार (अव्वल आबिर 11 बार दुरद शरीफ़) पढ कर केन्सर के मरीज पर दम कीजिये, अगर जम्म हो तो उस पर भी दम कीजिये अगर केन्सर का जम्म जिस्म के अन्दरूनी हिस्से या पर्टे की जगह हो तो जम्म की जगह पर कपडे के ठीपर दम कर दीजिये. अगर जिस्म के बाहर जम्म है तो सरसों के तेल पर भी दम कर दीजिये और वोह तेल मरीज जम्म पर लगाता रहे, إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى जम्म सहीह हो जाअेगा और केन्सर दूर होगा.

﴿66﴾ केन्सर प्वाल किसी किस्म का हो, अेक किलो जैतून के तेल में 100 ग्राम लुहदी अख़ी तरह पका कर छान कर रभ लीजिये, मरीज हर गिजा के आ'द बीस बीस कतरे पी कर ठीपर नीम गर्म पानी पी लिया करे. إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى फ़ाअेदा होगा.

### रोजाना पिस्ते पाछये और जुद को केन्सर से बचाछये

अेक जदीद तहकीक के मुताबिक रोजाना मुनासिब भिकदार में पिस्ते जाने से फ़ेफ़ों और दीगर कर्ह किस्म के केन्सर्ज का भतरा कम हो जाता है. केन्सर पर काम करने वाली अेक “अमरीकी अेसोसीअेशन” के तहत्त की जाने वाली तहकीक के मुताबिक पिस्ते में विटामिन E की अेक भास किस्म होती है जिस के जरीअे फ़ेफ़ों समेत कर्ह अक्साम के केन्सर्ज के भिलाफ़ मजभूत मुदा-फ़-अती निजाम (Strong Immune System)

करमाने मुस्तकी علی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم : जिस ने मुज पर दस मरतबा दुरदे पाक पढा अल्लाह उस पर सो रलमतें नाजिल करमाता है. (ब्रान)

हासिल किया जा सकता है.

## डुपते हाकिमा के लिये यार अवराह

﴿67﴾ **يَا قَوِي** 11 बार, पांथों नमाजों के आ'द सर पर दालना (या'नी सीधा) हाथ रफ कर पढिये. (जन्ती जेवर, स. 605)

﴿68﴾ रात को सोते वक्त “**يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ**” तीन मरतबा पढ कर उ बादाओं पर दम कीजिये, अक बादाम उसी वक्त, अक सुब्द नहार मुंड और अक, दो पहर के वक्त पाठिये. वालिदैन भी येह अमल कर के बर्यों को पिला सकते हैं. (मुदत : 21 दिन)

﴿69﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 564 बार पढ कर अल्लाह तआला के हुजूर डिफ्त में आसानी की दूआ कीजिये, कोशिश जारी रखने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** कुरआने करीम डिफ्त हो जायेगा.

﴿70﴾ **يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ** अक बार कागज पर लिख कर ता'वीज बना कर आजू में बांध या गले में डाल लीजिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** निस्थान (या'नी भूलने) की बीमारी से छुटकारा हासिल होगा.

﴿71﴾ **يَا عَلِيْمُ** 7 बार और हर बार **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** के साथ सूरअे अलम नशरह 21 मरतबा पढ कर पानी पर दम कर के जिस बर्ये या बडे का हाकिमा कमजोर हो उस को पिलाइये. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** हाकिमा मजबूत हो जायेगा.

## शोहर और बीवी में महब्बत

﴿72﴾ अगर शोहर से बीवी कम महब्बत करती हो तो शोहर रोजाना आ'द नमाजे असर आ वुजू मुंड में मिस्री की उली रफ कर **يَا وَدُودُ** 101

करमाने मुस्तक। عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاللهُ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगों में से कजूस तरीन शप्स है. (ज़िबतीया)

बार (अव्वल आबिर तीन बार दुरुद शरीफ़) पढ कर अपनी बीवी का तसव्वुर बांध कर उस के सीने पर दम कर दे. अगर शोहर महब्बत कम करता हो तो बीवी येही अमल करे. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** मियां बीवी अेक दूसरे से महब्बत करने लगेंगे. (येह अमल सिर्फ़ मियां बीवी की महब्बत के लिये है और युपके से करना है न मियां बीवी अेक दूसरे को बताअें न किसी और को पता यले, के गलत फ़हमी के सबब नुकसान हो सकता है)

### बस्ये की ठेहनी कमज़ोरी का इहानी घलाज

﴿73﴾ **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** 786 बार (अव्वल आबिर तीन बार दुरुद शरीफ़) पढ (या पढवा) कर अेक बोतल पानी पर दम कर के रख लीजिये और वोह पानी रोज़ाना सुब्ह नहार मुंढ और सोते वक्त बस्ये को पिलाते रडिये, ज़रतन दूसरा पानी मिलाते रडिये. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** ठेहून रोशन हो जाअेगा. (मुदत : ता हुसूले मुराद)

### अेपेन्डिकस का इहानी घलाज

﴿74﴾ आ-यतुल कुर्सी 11 बार और **يَا عَظِيمُ** 7 बार (अव्वल आबिर तीन बार दुरुद शरीफ़) पढ कर अेक चुटकी नमक पर दम कर के उस को पानी में डाल कर पी लीजिये. येह अमल दिन में तीन बार कीजिये. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** अेपेन्डिकस अत्म हो जाअेगा.

### मिर्गी के दौरे का इहानी घलाज

﴿75﴾ **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ الرَّحِيمِ** 75 बार (अव्वल आबिर तीन बार दुरुद शरीफ़) पढ कर अेक चुटकी नमक पर दम कर के उस को पानी में डाल कर पी लीजिये. येह अमल दिन में तीन बार कीजिये. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** मिर्गी का दौरा अत्म हो जाअेगा.

करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक भाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिंक हो और वोह मुज पर दुइदे पाक न पढे. (6)

## नजर के इहानी घलाज

﴿76﴾ अेक मर्तबा सू-रतुल कौसर पढ कर बय्ये के सीधे गाल पर दम कीजिये. दूसरी मर्तबा सू-रतुल कौसर पढ कर उलटे गाल की तरफ और तीसरी मर्तबा पढ कर उस की पेशानी पर दम कर दीजिये **إِنْ شَاءَ اللهُ** नजर उतर जायेगी. (शुइअ में तीन बार दुइद शरीफ अेक बार अउजु और हर बार सू-रतुल कौसर से कबल पूरी **بِسْمِ اللهِ** पढनी है)

﴿77﴾ तीन मर्तबा **بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** पढ कर सात मर्तबा येह दुआ : **بِسْمِ اللهِ، اللَّهُمَّ اَذْهَبْ حَزْهًا وَبَرْدَهَا وَوَصَبَهَا** पढ कर जिस को नजर हो उस पर दम कीजिये, **إِنْ شَاءَ اللهُ** नजर उतर जायेगी.

﴿78﴾ **بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** सात बार, अेक मर्तबा आ-यतुल कुर्सी, तीन मर्तबा सू-रतुल इलक, तीन मर्तबा सू-रतुनास (इलक और नास के कबल हर बार पूरी **بِسْمِ اللهِ** पढनी है) अय्वल आबिर अेक बार दुइदे पाक पढ कर तीन अदद सुर्भ मिर्यो पर दम कीजिये. इर इन मिर्यो को मरीज के सर के गिर्द 21 बार घुमा कर यूल्हे में डाल दीजिये. **إِنْ شَاءَ اللهُ** नजर का असर दूर हो जायेगा.

## बल प्रेशर के दो देसी घलाज

﴿1﴾ यार अदद कढी पत्ते अेक कप पानी में रात भर पडे रहने दीजिये, सुब्ह नहार मुंह उन यार में से दो पत्ते यबा कर भा लीजिये और उपर से वोही पानी पी लीजिये. (बकिय्या दो कढी पत्ते सालन वगैरा में इस्ति'माल कर लीजिये) **إِنْ شَاءَ اللهُ** सिर्फ अेक डफते में बल प्रेशर नॉर्मल हो जायेगा बल्के अेक ही दिन में इर्क मडसूस होगी. **إِلْحَادُ اللهِ** इस इलाज से बल प्रेशर के मरीज के येहरे पर त्नी रौनक आ जाती है.

فرمانہ مستکف: صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم: جس نے روزے جوڑا دو سو بار دھڑکے پاک پدا اوس کے دو سو سال کے گوناگ مل آفک ائوے۔ (کرمال)

﴿2﴾ اڑبے اڑڑرت کرےلے کات کر بآج سبےت ٲوشک کر لآآآیے, آئر ٲیس کر ٲاااڑر بنا لآآآیے. سوبھ و شام آاآی آاآی یمآی ٲانے سے شوگر, ٲلاا ٲرेशर और कोलेस्ट्रॉल نॉرمल اے آآآےगा. (مڈتے اءلاآ : تا اوسولے شآآ)

**یہ رسالہ پڑ کر دوسرے کو دے دیجیے**

شاہی گمی کی تکڑیباا, اءآاتاآاا, آا'راس اور آولوسے مآلاا وگرا مں مآ-ا-اااا مآنا کے شآآے آا رسااا اور م-ا-اا اءاوں ٲر موشاااا ٲهآلےااااا کر کے ساااا آماااے, گااااا کو اا نآآآے سااa

گمے مآنا, اآاا, مآآرر اور اے اااa



21 ر-آآاااااااااااااااا 1436 سآ.اا.

11-05-2015

**آآاااااااااا**

مٲبوعہ	کتاب	مٲبوعہ	کتاب
ااراااااااااا	اااااااااااااااا	ااراااااااااا	آراااااااااا
ااراااااااااا	اااااااااااا	ااراااااااااا	آآاراااا
ااراااااااااا	اااااااااااا	ااراااااااااا	مسلم
ااراااااااااا	اااااااااااا	ااراااااااااا	اااااااااا
ااراااااااااا	اااااااااااا	ااراااااااااا	آرآااا
ااراااااااااا	اااااااااااا	ااراااااااااا	اااااااااا
ااراااااااااا	اااااااااااا	ااراااااااااا	اااااااااا
ااراااااااااا	اااااااااااا	ااراااااااااا	اااااااااا
ااراااااااااا	اااااااااااا	ااراااااااااا	اااااااااا
ااراااااااااا	اااااااااااا	ااراااااااااا	اااااااااا
ااراااااااااا	اااااااااااا	ااراااااااااا	اااااااااا
ااراااااااااا	اااااااااااا	ااراااااااااا	اااااااااا
ااراااااااااا	اااااااااااا	ااراااااااااا	اااااااااا
ااراااااااااا	اااااااااااا	ااراااااااااا	اااااااااا
ااراااااااااا	اااااااااااا	ااراااااااااا	اااااااااا
ااراااااااااا	اااااااااااا	ااراااااااااا	اااااااااا
ااراااااااااا	اااااااااااا	ااراااااااااا	اااااااااا
ااراااااااااا	اااااااااااا	ااراااااااااا	اااااااااا
ااراااااااااا	اااااااااااا	ااراااااااااا	اااااااااا
ااراااااااااا	اااااااااااا	ااراااااااااا	اااااااااا

इरमाने मुस्तफ़ा (عليه و آله و سلم) : मुज पर दुइद शरीफ़ पढो अल्लाह तुम पर रहमत भेजेगा. (अहमद)

इंडरिस

उन्वान	संख्या	उन्वान	संख्या
दुइद शरीफ़ की इजीलत	1	पेट की बीमारी में मरने की इजीलत	15
बीमार आबिद	1	बीमारियों में मरने वाले शहीदों की निशान देही	15
बीमारी बहुत बड़ी ने'मत है	2	बा'ज अमराज में मरने वाला शहीद है	15
बीमारी में मोमिन और मुनाफ़िक का इर्क	3	मरीज की इयादत का सवाब	16
जम्मी छोते ही हंस पड़ी (हिकायत)	4	बीमार को हुआ के लिये कछो	16
मुसीबत ह्युपाने की इजीलत	4	इयादत करते वक्त की अक सुन्नत	17
दाढ में दई के सबब में सो न सका ! (हिकायत)	5	इयादत में सात बार पढने की हुआ	17
बीमार के लिये तोडफ़ा	5	इयादत के 7 म-दनी कूल	17
बीमारी के इजाईल पर 5 इरामीने मुस्तफ़ा	6	बीमारी और जूट	18
बिगैर बीमार हुअे वफ़ात	7	मा'भूली बीमारी को सप्त बीमारी कलने के	
अक रात के बुभार का सवाब	7	मु-तअद्लिक जूट की 6 मिसालें	18
बुभार मलशर की आग से बयाअेगा	7	हुभों के बा वुजूद नेकियों भरे जवाबात की मिसालें	20
बुभार को बुरा न कछो	8	मिजाज पुर्सी के जवाब में जूट भोलने की 9 मिसालें	21
सरकार को दो मर्दों के बराबर बुभार आता था	8	अक कलने की अक नय्यत	22
हम ने कभी किसी का बुरा नहीं याहा !	9	मरीज को तसल्ली देने के लिये बोले जाने वाले	
मरीज और कलिमअे कुफ़	9	जूट की 13 मिसालें	22
सवाब के शौक में मांग कर बुभार लिया (हिकायत)	10	मरीज के जूट भोलने की 13 मिसालें	24
राहे फुदा में सर दई पर सभ्र की इजीलत	11	बीमारियों के 78 इलानी इलाज	25
त-ल-बअे ईल्मे दीन और म-दनी काइलों के		बुभार के यार इलानी इलाज	25
मुसाफ़िरीन के लिये फुश भबरी	11	अैसे बुभार का इलानी इलाज ज़े	
सर दई के शुक्राने में 400 रकअत नक़ल (हिकायत)	12	दवाओं से न ज़ता छे	25
बुभार और दई सर मुभारक अमराज हैं	12	नींद न आने के दो इलानी इलाज	26
जन्नती फ़ातून (हिकायत)	13	ज़रवरो के काटने और उन से डिफ़ाजत	26
दवा भी सुन्नत है और हुआ भी	14	के 3 इलानी इलाज	
मिर्गी का इलानी इलाज	14	जिन्नात के अ-सरात के 3 इलानी इलाज	27
नस यढ जाने की इजीलत	15	सोते में कोई यीज तंग करती छे या....	27

કરમાને મુસ્તફા ﷺ : મુઝ પર કસરત સે દુરુદે પાક પઢો બેશક તુમ્હારા મુઝ પર દુરુદે પાક પઢના તુમ્હારે ગુનાહોં કે લિયે મઙ્ગિરત હૈ. (મુસ્લિમ)

ઉન્વાન	પૃષ્ઠા	ઉન્વાન	પૃષ્ઠા
જાદૂ કે 2 રૂહાની ઈલાજ	27	મિર્ગી કે 3 રૂહાની ઈલાજ	35
ફાલિજ વ લક્વા કે 2 રૂહાની ઈલાજ	28	સર કે બાલ ઝડને કા રૂહાની ઈલાજ	35
હેપાટાઈટિસ કા રૂહાની ઈલાજ	29	ગન્જ દૂર કરને કા અમલ	36
યરકાન (JAUNDICE) કે 4 રૂહાની ઈલાજ	29	સૂજન કા રૂહાની ઈલાજ	36
દાંતોં કે દર્દ કે 2 રૂહાની ઈલાજ	29	મૂઝી અમરાઝ સે હિફાઝત કા રૂહાની નુસ્ખા	36
દાંત કે દર્દ કા ઈક્સીર અમલ	30	કમર કે દર્દ કા રૂહાની ઈલાજ	36
પિત્તે ઓર મસાને કી પથરી કા રૂહાની ઈલાજ	30	આધે ઓર પૂરે સર કે દર્દ કે 5 રૂહાની ઈલાજ	37
કચ્ચે પપીતે કે ઝરીએ ગુદે ઓર		દર્દે સર, ચક્કર આને ઓર દિમાગી	
પિત્તે કી પથરી કા ઈલાજ	30	કમઝોરી કા રૂહાની ઈલાજ	38
ગુદે ઓર પેશાબ કી બીમારિયોં કે 3 રૂહાની ઈલાજ	31	દીની ઈમ્તિહાન મેં કામ્યાબી કે લિયે	38
ગુદે કી બીમારિયોં કે લિયે તિબ્બી નુસ્ખા	32	આફતોં, બીમારિયોં, બે રોઝગારિયોં કે દો	
પેશાબ મેં ખૂન આને કા રૂહાની ઈલાજ	32	રૂહાની ઈલાજ	38
નાફ કા રૂહાની ઈલાજ	32	ખાવન્દ કો નેક નમાઝી બનાને કે લિયે	39
એહતિલામ કે દો રૂહાની ઈલાજ	32	કેન્સર કે 4 રૂહાની ઈલાજ	39
આંખોં કે અમરાઝ કે 3 રૂહાની ઈલાજ	33	રોઝાના પિસ્તે ખાઈયે ઓર ખુદ કો	
કાન કે દર્દ કા રૂહાની ઈલાજ	33	કેન્સર સે બચાઈયે	40
નઝલા ઝુકામ કા રૂહાની ઈલાજ	34	કુવ્વતે હાફિઝા કે લિયે ચાર અવરાદ	41
દિલ કી ધડકન બઢ જાને કા રૂહાની ઈલાજ	34	શોહર ઓર બીવી મેં મહબ્બત	41
દિલ કે સૂરાખ કા રૂહાની ઈલાજ	34	બચ્ચે કી ઝેહની કમઝોરી કા રૂહાની ઈલાજ	42
નઝરે બદ કે 3 રૂહાની ઈલાજ	34	એપેન્ડિક્સ કા રૂહાની ઈલાજ	42
નઝર ઓર દર્દ કા રૂહાની ઈલાજ	34	મિર્ગી કે દોરે કા રૂહાની ઈલાજ	42
નઝર ઓર હર કિસ્મ કે શર સે	35	નઝર કે રૂહાની ઈલાજ	43
બચ્ચોં કી હીફાઝત કે લિયે		બ્લડ પ્રેશર કે દો દેસી ઈલાજ	43

યેહ રિસાલા પઢ લેને કે બા'દ સવાબ  
કી નિયત સે કિસી કો દે દીજિયે

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## कुरआन भुला देने का अजान

यकीनन डिफ़्ते कुरआने करीम कारे सवाबे अजीम है मगर याद रहे ! डिफ़्ते करना आसान मगर उम्र भर इस को याद रखना दुश्वार है. दुफ़्फ़ाज व हाफ़िजात को यादिये के रोजाना कम अज कम अक पारह लाजिमन तिलावत कर लिया करें. जो दुफ़्फ़ाज र-मजानुल मुबारक की आमद से थोडा असा कबल इकत मुसल्ला सुनाने के लिये मन्जिल पक्की करते हैं और इस के ठलावा **مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ** सारा साल गइलत के सबब कइ आयात तुलाओ रहते हैं, वोड बार बार पढ़ें और पौके पुदा **عَزَّوَجَلَّ** से लरजें. **इरमाने मुस्तफ़ा** : **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** : “जो शप्स कुरआन पढे फिर उसे तुला दे तो कियामत के दिन अद्लाह तआला से कोठी डो कर मिले.” (अबुदाउद हदिथ 1474) सदरुशशरीअह, अदरुतरीकह उजरते अद्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَمِي** इरमाते हैं : कुरआन पढ कर तुला देना गुनाह है. जो कुरआनी आयात याद करने के बा'द तुला देगा बरोजे कियामत अन्धा उठया जाओगा. (अहारे शरीअत, जि. 1, स. 553) **आ'ला** उजरत ठमाम अहमद रजा पान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** इरमाते हैं : उस से जियादा नादान कौन है जिसे पुदा औसी डिम्मत बप्शे और वोड उसे अपने हाथ से भो दे अगर कद्र इस (डिफ़्ते कुरआने पाक) की जानता और जो सवाब और द-रजात इस पर मौजिद हैं (या'नी जिन का वा'दा किया गया है) उन से वाकिफ़ होता तो इसे जानो दिल् से जियादा अजीज (प्यारा) रफ़ता. मजीद इरमाते हैं : जहां तक डो सके इस के पढाने और डिफ़्ते कराने और पुद याद रखने में कोशिश करे ताके वोड सवाब जो इस पर मौजिद (या'नी वा'दा किये गये) हैं हासिल डों और बरोजे कियामत अन्धा कोठी उठने से नजात पाओ.

(इतावा र-जविय्या, जि. 23, स. 645, 647)